लक्ष्य अन्त्योदय प्रण अन्त्योदय पथ अन्त्योदय

सत्यमेव जयते

पंडित दीनदयाल उपाध्याय 1916 2016 जन्म शताब्दी वर्ष

उत्तर प्रदेश सरकार

सबका साथ सबका विकास

एकात्मवाद के प्रणेता

पंडित दीनदयाल उपाध्याय

जन्म : 25 सितम्बर, सन् 1916

परिनिर्वाण : 11 फरवरी, सन् 1968

''हम अतीत के गौरव से अनुप्राणित हैं, परन्तु उसको भारत के राष्ट्र-जीवन का सर्वोच्च बिन्दु नहीं मानते हैं। हम वर्तमान के प्रति यथार्थवादी हैं, किंतु उससे बंधे नहीं है। हमारी आंखों में भविष्य के स्वर्णिम स्वप्न हैं, किंतु हम निद्रालु नहीं हैं बल्कि उन स्वप्नों को सच करने वाले कर्मयोगी हैं। अनादि, अतीत, अस्थिर, वर्तमान और चिरंतन भविष्य की कालजयी संस्कृति के हम पुजारी हैं। विजय का विश्वास है, तपस्या का निश्चय लेकर चलें।''

– पं. दीनदयाल उपाध्याय

नैरोबी में पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी

प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी के वृन्दावन स्थित आश्रम में
श्री गुरुजी व श्री अटल बिहारी वाजपेयी के साथ
पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी

पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी, पं0 पी.एन. डोगरा व
श्री जे.पी. माथुर के साथ।

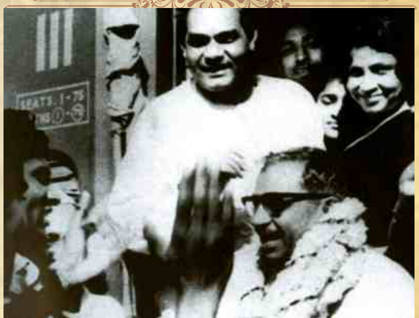

वर्ष 1967 में कालीकट रेलवे स्टेशन पर
पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी का स्वागत करते
श्री अटल बिहारी वाजपेयी व अन्य।

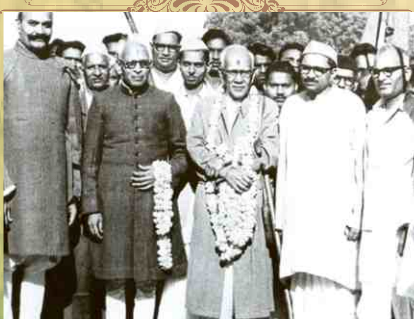

श्री रामनाथ गोयनका जी के साथ
पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी

वर्ष 1965 में श्री बलराज मधोक व पं0 बच्छराज व्यास
के साथ कच्छ आन्दोलन में शिरकत करते हुये
पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी

पंडित दीनदयाल उपाध्याय

जन्म एवं शिक्षा

- पंडित दीनदयाल उपाध्याय के पिता श्री भगवती प्रसाद गांव नगला चन्द्रभान जिला मथुरा के निवासी थे। तत्कालीन सामाजिक परम्परा के अनुसार उनकी पत्नी श्रीमती रामप्यारी अपने प्रथम प्रसव के लिए अपने पिता श्री चुन्नी लाल के यहां गईं थीं। श्री चुन्नी लाल राजस्थान में जयपुर के पास धनकिया में स्टेशन मास्टर थे, वहीं दीनदयाल जी का जन्म 25 सितम्बर, 1916 को हुआ। बचपन में उन्हें दीनानाथ पुकारते थे।
- दीनदयाल जी के जन्मकाल के नक्षत्र एवं लक्षण विलक्षण थे। ज्योतिषियों ने उनके बारे में भविष्यवाणी की थी कि यह बालक अत्यन्त विलक्षण एवं प्रतिभाशाली होगा। विद्या एवं ज्ञान में अग्रणी रहेगा। समाज तथा राष्ट्र की सेवा का व्रत धारण करेगा। देश–विदेश में सम्मान प्राप्त करेगा। यह दलितों, शोषितों का उद्धार करने का बीड़ा उठायेगा। यह विवाह भी नहीं करेगा।
- दीनदयाल जी के पिताजी रेलवे विभाग में कर्मचारी थे। इनका एक छोटा भाई भी था। इनकी माता जी दोनों बच्चों के साथ अपने मायके में थीं। अभी इनकी आयु ढ़ाई वर्ष की थी कि उसी समय इनके पिताजी का देहांत हो गया। माता जी को बड़ा आघात लगा। उनका स्वास्थ्य खराब रहने लगा। कुछ दिनों के बाद उनका भी देहांत हो गया। तब दीना की आयु 7 वर्ष की थी।
- दीनदयाल जी के नाना श्री चुन्नी लाल दोनों बच्चों को लेकर अपने गांव आ गये, वह भी रेलवे विभाग में स्टेशन मास्टर थे। कुछ समय के बाद नाना श्री चुन्नी लाल ने दोनों बच्चों को अपने मामा राधारमण के पास गंगापुर में भेज दिया। वहां पर दीना ने स्कूल में प्रवेश लिया। इस समय दीना की आयु 9 वर्ष की थी।
- कुछ दिन के बाद मामा राधारमण को क्षयरोग हो गया। क्षयरोग छुआछूत की बीमारी होने के कारण स्थानीय चिकित्सकों ने इलाज करने से मना कर दिया। लखनऊ में एक पारिवारिक सम्बन्धी चिकित्सा विभाग में कार्यरत थे। उन्होंने श्री राधारमण को अपने यहां आने के

लिए कहा पर मामा के साथ कोई व्यक्ति जाने को तैयार नहीं हो पाया तो दीना ही मामा के साथ लखनऊ गये, जिससे इनकी पढ़ाई रुक गई। जैसे ही मामा की तबियत कुछ ठीक हुई। दीना वापस गंगापुर आये और स्कूल की परीक्षा में बैठे और कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

- दीनदयाल जी ने आगे की पढ़ाई के लिए कोटा के एक विद्यालय में 5वीं कक्षा में प्रवेश लिया। वहां इन्होंने छात्रावास में रहते हुये कक्षा 7 तक की पढ़ाई की, इसके पश्चात वह अध्ययन हेतु राजगढ़ गये जहां उनके एक अन्य चचेरे मामा श्री नारायण शुक्ल स्टेशन मास्टर थे।
- सन् 1934 में उनके छोटे भाई शिवदयाल को टाइफाइड हो गया जो ठीक न हो सका और उनका भी देहांत हो गया। भाई से बहुत स्नेह तथा आत्मीयता थी। दीनदयाल जी को भाई का बिछोह सहन करना पड़ा। इसी बीच उनके चचेरे मामा का भी राजगढ़ से सीकर स्थानान्तरण हो गया। सीकर में उनका प्रवेश 10वीं कक्षा में हुआ था। परीक्षा से कुछ दिन पहले वह बीमार हो गये और इलाज हेतु उन्हें मामा राधारमण के पास जाना पड़ा। ठीक होकर वापस लौटे और परीक्षा में बैठे। यह सब होने के बावजूद भी वह प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुये और सम्पूर्ण अजमेर बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इससे प्रसन्न होकर सीकर के महाराजा ने उनको एक स्वर्ण पदक तथा 250 रुपये का पुरस्कार दिया। 10 रुपये मासिक छात्रवृति भी प्रदान किया।
- दीनदयाल जी ने आगे की पढ़ाई के लिए पिलानी के बिरला कालेज में प्रवेश लिया। वहां छात्रावास में रहने लगे। वह रात्रि में पढ़ाई करते थे जब सभी सहपाठी सो जाते थे। उन्होंने सन् 1936 में इंटरमीडिएट की प्रथम वर्ष की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। अगले वर्ष सन् 1937 में उन्होंने इंटर परीक्षा उत्तीर्ण की। जिसमें वह न केवल प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुये बल्कि पूरे इंटर मीडिएट बोर्ड में प्रथम स्थान पर रहे। श्री घनश्याम दास बिरला ने उन्हें पुरस्कृत किया। उन्होंने दीनदयाल जी से पूछा कि तुम्हें क्या चाहिए तो उत्तर में उनका आशीर्वाद मांगा। बिरला जी ने स्वर्ण पदक, 250 रुपये तथा 10 रुपये मासिक छात्रवृत्ति के रूप में प्रदान किया।

- मामा राधारमण के परिवार में उच्च शिक्षा का कोई वातावरण नहीं था, सभी सदस्य थोड़ी पढ़ाई करके रेलवे की नौकरी कर लेते थे। मामा ने दीनदयाल की प्रतिभा को देखकर उन्हें कानपुर स्नातक धर्म कालेज में प्रवेश दिलाया। दीनदयाल ने वहां बी.ए. की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया, फलतः उन्हें 30 रूपये मासिक छात्रवृत्ति प्रदान की गई।
- **एम.ए. की पढ़ाई :** दीनदयाल जी एम.ए. अंग्रेजी साहित्य से करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने आगरा के सेंट जॉन्स कालेज में प्रवेश लिया। यहां पर वह माननीय नाना जी देशमुख के सम्पर्क में आये। आगरा में पढ़ाई करते हुये उन्हें पता चला कि उनकी एक ममेरी बहन श्रीमती रामादेवी बीमार हैं। दीनदयाल जी का इस ममेरी बड़ी बहन के प्रति घनिष्ठ स्नेह तथा श्रद्धा थी। इलाज हेतु वह आगरा आईं। उनकी सेवा तीमारदारी का दायित्व दीनदयाल जी का ही था। कई पद्धतियों से इलाज करवाया गया, परन्तु डॉक्टर ने जवाब दे दिया। इस बीच सन् 1940 में उन्होंने एम.ए. प्रथम वर्ष की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर ली। बीमार ममेरी बहन की सेवा में व्यस्त रहने के कारण एम.ए. द्वितीय वर्ष की पढ़ाई वह नहीं कर पाये।
- **कुशाग्र बुद्धि :** भांजे को मामा अच्छी नौकरी में भेजना चाहते थे। अतः इच्छा न होते हुये भी उन्होंने एक प्रतियोगितात्मक परीक्षा भी दी, जिसका साक्षात्कार हुआ तो दीनदयाल जी का नाम परिणाम तालिका में सबसे ऊपर था, किन्तु उन्होंने यह नौकरी नहीं की और प्रयाग जाकर गवर्मेन्ट ट्रेनिंग कॉलेज में एल.टी. में प्रवेश लेकर अध्ययन करने लगे तथा सामाजिक कार्य भी करते रहे। सन् 1942 में उन्होंने एल.टी परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर ली। उनके विद्यार्थी जीवन का यही अंतिम सोपान था। शिक्षा समापन पर वी श्री भाऊराव देवरस के पास गये और अपने जीवन को पूर्णकालिक रूप से समाज सेवा में समर्पित कर दिया।
- **राष्ट्र एवं समाज के प्रति समर्पण :** कानपुर में दीनदयाल जी अपने सहपाठी श्री बालूजी महाशब्दे व श्री सुन्दर सिंह भंडारी के साथ मिलकर राष्ट्र एवं समाज के लिए कार्य प्रारम्भ किया। इस दौरान वह डॉ. हेडगेवार व श्री भाऊराव देवरस के सम्पर्क में आये। श्री भाऊराव देवरस जी राष्ट्र एवं समाज कार्य हेतु हर नगर में मेधावी छात्रों की बैठकें कर रहे थे। सन् 1937 में वह कानपुर आये और ऐसी ही एक बैठक की। इस बैठक में

दीनदयाल जी भी आये। यह देवरस जी से उनका पहला सम्पर्क था। उन्होंने देवरस जी से कई बुद्धिमत्ता पूर्ण प्रश्न भी किये, जिनके समुचित उत्तर माननीय देवरस जी ने दिये तथा दीनदयाल जी की प्रतिभा और क्षमता का संज्ञान भी लिया। सन् 1938 की मकर संक्रांति को कानपुर में दीनदयाल जी ने समाज कार्य में अग्रणी भूमिका निभाना प्रारम्भ किया। यहीं उनके जीवन का राष्ट्र एवं समाज के प्रति सर्व समर्पण का आरम्भ था। सन् 1939 में नागपुर तथा सन् 1942 में सामाजिक कार्य का प्रशिक्षण लिया।

- **पत्रकार दीनदयाल :** सन् 1947 में श्री भाऊराव देवरस जी की प्रेरणा एवं उनके विचार–विमर्श के उपरान्त लखनऊ में दीनदयाल जी ने 'राष्ट्रधर्म प्रकाशन' स्थापित किया और मासिक पत्रिका 'राष्ट्रधर्म' प्रकाशित एवं प्रसारित की जाने लगी। बाद में 'पांचजन्य' साप्ताहिक और 'दैनिक स्वदेश' का भी प्रकाशन यहां से हुआ। 'पांचजन्य' का अधिक विस्तार होने पर उसका प्रकाशन बाद में दिल्ली से किया जाने लगा, जो आज तक चल रहा है और 'स्वदेश' के स्थान पर 'तरूण भारत' लखनऊ से निकाला जाने लगा। 'राष्ट्रधर्म' आज भी राजेन्द्र नगर, लखनऊ से निकल रहा है।

  प्रेस में सामग्री देने से लेकर कम्पोज करने और प्रूफ पढ़ने तक सभी काम उन्होंने किये। यहां तक कि छपाई की मशीन पर काम करने वाले कारीगरों के थक जाने या न आने पर वह स्वयं कम्पोजिंग का काम करते थे। उनका यह प्रयत्न रहता था कि समाचार पत्र पाठकों के हाथों में उचित समय पर पहुंच जाये। इसलिए मैनेजिंग डायेक्टर पद पर रहते हुये भी प्रेस का छोटे से छोटा कोई भी काम वह अपनी प्रतिष्ठा के विरूद्ध नहीं मानते थे। वह कार्य को महत्व देते थे न कि पद और स्तर को।

- **लेखक दीनदयाल :** दीनदयाल उपाध्याय साहित्यकार एवं प्रबुद्ध लेखक थे। सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य एवं जगत गुरू शंकराचार्य उनके द्वारा लिखे गये उपन्यास हैं। अखंड भारत क्यों ? भारतीय अर्थ नीति की दिशा आदि पुस्तकों में उनकी विविधायामी लेखनीय क्षमता का सहज ही अनुभव होता है। उनका सम्पूर्ण वांङ्मय 15 खंडों में प्रकाशित हुआ है।

इन पत्रिकाओं में दीनदयाल उपाध्याय मात्र संपादक नहीं रहे बल्कि वास्तविक संचालक, सम्पादक, प्रूफरीडर एवं आवश्यकता होने पर उनके कम्पोजर, मशीन मैन, सब कुछ दीनदयाल उपाध्याय ही थे। उनका यह प्रयत्न रहता था कि समाचार पत्र पाठकों के हाथों में उचित समय पर पहुंच जाये। इसलिए मैगजीन डायरेक्टर पद पर रहते हुये भी प्रेस का छोटे से छोटा कोई भी काम वे अपनी प्रतिष्ठा के विरूद्ध नहीं मानते थे।

- **अध्येता :** पंडित जी 'स्वाध्याय' (मनुष्य का स्वयं का अध्ययन) पर विशेष बल देते थे क्योंकि पठन–पाठन और चिंतन–मनन के सहारे ही मनुष्य ज्ञान को आत्मसात् करता है। वह 'स्वभाषा' के पक्षधर थे, देश के कामकाज के लिए अपनी ही भाषाओं का प्रयोग व्यावहारिक एवं राष्ट्रीय स्वाभिमान दोनों ही दृष्टि से आवश्यक है।

  दीनदयाल जी को आधुनिक महापुरूषों में विवेकानंद, तिलक और अरविन्द अपनी विचार दिशा के अधिक अनुकूल दिखाई पड़ते हैं। जिस पुस्तक से उन्होंने सर्वाधिक ग्रहण किया है, वह बालगंगाधर तिलक स्मारक के नाते प्रकाशित हुई, "दौशिक शास्त्र" पुस्तक है, जो वैदिक साहित्य से लेकर वेदांत दर्शन तक के साहित्य का संकलित सामाजिक विचारदर्शन व्याख्यायित करती है।

- **संस्कृति के उपासक :** दीनदयाल भारत की कमजोरियों के प्रति भी सचेत थे। एकांगीकता, कालबाध्यता तथा निहित स्वार्थता के अनेक रोग भारत को अंदर से खोखला कर रहे हैं। अतः सांस्कृतिक श्रेष्ठता के नाम पर यथास्थितिवाद के खिलाफ थे। वह लिखते हैं "हमने अपनी प्राचीन संस्कृति का विचार किया है, लेकिन हम कोई पुरातत्ववेत्ता नहीं है'' हमारा ध्येय संस्कृति का संरक्षण नहीं, अपितु उसे गति देकर सजीव व सक्षम बनाना है। हमें अपनी रूढ़ियां समाप्त करनी होंगी, बहुत से सुधार करने होंगे ''आज यदि समाज में छुआछूत और भेदभाव घर कर गये हैं, जिनके कारण लोग मानव को मानव समझकर नहीं चलते और जो राष्ट्र की एकता के लिए घातक सिद्ध हो रहे हैं, हम उनको समाप्त करेंगे।"

- दीनदयाल भारतीय संस्कृति के उपासक थे तथा पश्चिम की विकृति के प्रति सावधान थे। अतः न वह किसी विदेशी विचार को एकदम हेय मानते थे और न ही हर स्वदेशी पीड़ा को ग्रहणीय। "हम मानव के ज्ञान और उपलब्धियों का संकलित विचार करें इन तत्वों में जो हमारा है उसे युगानुकूल और जो बाहर का है उसे देशानुकूल ढालकर हम आगे का विचार करें।"
- **वैचारिक समरसता :** पाश्चात्य विचारों के प्रति भी वह छुआछूतवादी नहीं थे। वह लोकतंत्र और समाजवाद में समन्वय को संभव मानते थे। उपाध्याय जी की मान्यता थी "हमें ज्ञान का आदान–प्रदान विश्व के प्रत्येक देश से करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए पर ऐसा करते समय हमें अपने जीवन मूल्यों को याद रखना होगा।"

मुम्बई के अपने ऐतिहासिक भाषण में जब एकात्म मानववाद की व्याख्या प्रस्तुत की, तब बहुत भावपूर्ण शब्दों में उन्होंने अपने व्याख्यान का समापन किया – "विश्व का ज्ञान और आज तक की अपनी सम्पूर्ण परम्परा के आधार पर हम ऐसे भारत का निर्माण करेंगे जो हमारे पूर्वजों के भारत से भी अधिक गौरवशाली होगा, जिसमें जन्मा मानव अपने व्यक्तित्व का विकास करता हुआ, सम्पूर्ण मानवता ही नहीं अपितु सृष्टि के साथ एकात्मकता का साक्षात् कर 'नर से नारायण' बनने में समर्थ हो सकेगा। यह हमारी संस्कृति का शाश्वत दैवीय और प्रवाहमान रूप है। चौराहे पर खड़े विश्व मानव के लिए यही हमारा दिग्दर्शन है। भगवान हमें शक्ति दें कि हम इस कार्य में सफल हों, यही प्रार्थना है।"

- **राष्ट्रसेवा सर्वोपरि :** सन् 1942 में प्रयाग गवर्नमेन्ट ट्रेनिंग कॉलेज से एल.टी. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीण करके जब दीनदयाल जी अपने मामा जी के घर नहीं गये तो उनके ममरे भाई श्री बनवारी लाल ने उन्हें घर लौट आने के लिए पत्र लिखा तथा उनके मामाजी की बीमारी का समाचार दिया, तब वे मामा जी को लिखते हुये कहते हैं "परसों आपका पत्र मिला तभी से विचारों में भावनाओं एवं कर्तव्य का तुमुल युद्ध चल रहा है। एक ओर भावना और मोह खींचते हैं, तो दूसरी ओर पुरखों की आत्मायें पुकारती हैं।

  आगे लिखते हैं "मुझे एक जिले में समाज कार्य करना होगा। इस प्रकार सोते हुये समाज से मिलने वाले कार्यकर्ताओं की कमी को पूरा करना होता है। सारे जिले में काम करने के कारण न तो एक स्थान पर दो चार दिन से अधिक ठहरना संभव है और न किसी प्रकार की नौकरी। सामाजिक कार्यकर्ता के लिए पहला स्थान समाज और देश के कार्य का रहता है और उसके बाद अपने व्यक्तिगत कार्यों का। अतः मुझे समाज कार्य के लिए जो आज्ञा मिली थी, उसका पालन करना पड़ा।"

  राष्ट्रीयता के साथ समझौता न करने की अपनी मानसिकता को वह एक अन्य लेख में इस प्रकार अभिव्यक्त करते हैं "यदि हम एकता चाहते हैं तो भारतीय राष्ट्रीयता का दर्शन करें, उसे मानदंड मानकर चलें। भागीरथी की इस पुण्यधारा में सभी प्रवाहों का संगम होने दें। यमुना भी मिलेगी और अपनी सारी कालिमा खोकर गंगा की धवल धारा में एकरूप हो जायेगी।"

- **राजनीति में पदार्पण :** दीनदयाल जी ने सन् 1951 में राजनीति में पदार्पण किया। डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने दीनदयाल जी के बारे में कहा था कि "यदि मुझे ऐसे दो दीनदयाल मिल जायें तो मैं देश का राजनीतिक नक्शा बदल दूंगा।"

  28 दिसम्बर, सन् 1967 को कालीकट के एक अधिवेशन में उनके द्वारा दिया गया भाषण इस प्रकार रहा –

प्रतिनिधि साथियों, इस वर्ष आपने मुझे प्रधान के नाते कार्यभार सौंपा है। हमारा दल एक कार्यकर्ताओं का संगठन है। प्रत्येक कार्यकर्ता समान भाव से अधिकाधिक जिम्मेदारी और रूचि से काम में जुटा है। इस एकजुट एवं वर्द्धमान संगठन की संवैधानिक आवश्यकता की पूर्ति में आपने मेरे प्रति विश्वास प्रकट कर जो मुझे गौरव प्रदान किया है वह आपके हृदय की विशालता और स्नेहशीलता का परिचायक है। इस पूंजी के सहारे ही मैं पिछले पन्द्रह वर्षों से महामंत्री के नाते काम करता रहा। आगे भी यही मेरा सम्बल रहेगा।

- **श्री सुन्दर सिंह भंडारी ने कहा था :** राजनीति के क्षेत्र में उत्तेजना और आंदोलन के वशीभूत भटकाव आना स्वाभाविक माना जाता है। पंडित दीनदयाल जी ने सुदृढ़ सिद्धांतों के आधार पर समय–समय पर विभिन्न समस्याओं एवं कठिनाइयों से जूझने के लिए उन्होंने मार्गदर्शन किया।

महाप्रस्थान

- **काल यात्रा :** 10 फरवरी, सन् 1968 को प्रातः काल 8.00 बजे पंडित दीनदयाल जी को जो लखनऊ में श्रीमती लता खन्ना के घर ठहरे हुये थे, बिहार से श्री अश्विनी कुमार जी का फोन मिला, जिसमें उन्होंने पंडित जी से बिहार में आयोजित होने वाली बैठक में अगले दिन उपस्थित रहने का आग्रह किया। फोन पर दिल्ली में महामंत्री श्री सुन्दर सिंह भंडारी से बातचीत कर उन्होंने पटना फोन कर अपनी स्वीकृति दे दी।

  सायंकाल 7 बजे पठानकोट–स्यालदह एक्सप्रेस की प्रथम श्रेणी के डिब्बे में, पंडित जी पटना के लिए रवाना हुये। साथ में एक छोटी–सी अटैची, हल्का बिस्तरा, पुस्तकों का एक झोला तथा टिफिन था। श्री रामप्रकाश गुप्ता (उत्तर प्रदेश के तत्कालीन उप मुख्यमंत्री) तथा श्री पीताम्बरदास (तत्कालीन सदस्य विधान परिषद्) विदा करने वालों में प्रमुख थे।

जिस बोगी में पंडित जी को आरक्षण मिला था उसका आधा भाग तृतीय श्रेणी का था। प्रथम श्रेणी के भाग में ए, बी, सी तीन कम्पार्टमेंट थे तथा कोरीडार था। कम्पार्टमेंट में पंडित जी तथा श्री एस.पी. सिंह थे जो भारतीय भौगोलिक सर्वेक्षण विभाग के सहायक निदेशक थे। बी कम्पार्टमेंट में उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के सदस्य श्री गौरीशंकर राय, जो वाराणसी जा रहे थे, अकेले थे। सुविधा की दृष्टि से उनकी बर्थ श्री राय के साथ परिवर्तित करा दी गई।

जौनपुर स्टेशन पर श्री यादवेन्द्रदत्त दुबे (राजा साहब जौनपुर) का एक निजी पत्र लेकर श्री कन्हैया जी रात्रि के 12.00 बजे आये। पत्र पढ़कर उसका उत्तर शीघ्र देने का आश्वासन देकर पंडित जी द्वार तक श्री कन्हैया को छोड़ने आये। रात्रि 12.12 बजे ट्रेन जौनपुर से चल दी। 2.15 बजे यह बोगी काट कर दिल्ली हावड़ा एक्सप्रेस में जोड़ दी गई। वह 2.50 बजे मुगलसराय से रवाना हुई।

प्रातः 6.00 बजे पटना स्टेशन पर श्री कैलाशपति मिश्र स्वागतार्थ उपस्थित थे पर लखनऊ बोगी खाली थी। उन्होंने सोचा किसी कारणवश पंडित जी नहीं आ सके।

प्रातः 9.30 बजे मुकामा स्टेशन पर किसी ने बी कम्पार्टमेंट में सीट के नीचे एक अटैची देखी और वह रेलवे अधिकारी को सौंप दी।

- **शव की प्राप्ति :** 11 फरवरी, सन् 1968 को प्रातःकाल 3.30 बजे मुगलसराय यार्ड के लिवरमैन ईश्वरदयाल ने सहायक स्टेशन मास्टर को टेलीफोन पर सूचना दी कि प्लेटफार्म से लगभग 150 गज दूर मेन लाइन की दक्षिणी की ओर के बिजली खम्भा नं.–1276 से लगभग 3 फुट दूर एक शव लोहे और कंकड़ों के बीच पड़ा है। वास्तव में शव को सबसे पहले शंटिंग पोर्टर दिग्पाल ने प्रातः 3:00 बजे देखा था। उसने किशोर मिश्र गनर को कहा और मिश्र ने आगे ईश्वरदयाल को सूचना दी। प्रातः 3:35 बजे स्टेशन मास्टर ने पुलिस को सूचना दी। 3.45 बजे 3 सिपाही वहां निगरानी के लिए पहुंचे और प्रातः 4:00 बजे रेलवे पुलिस के दरोगा श्री फतेहबहादुर वहां पहुंच गये। सुबह 6:00 बजे रेलवे डाक्टर आया, जिसने अधिकृत रूप से मृत घोषित किया। प्रातः 7:30 बजे शव का प्रथम फोटो लिया गया।

शव जमीन पर सीधा पड़ा था, मानो किसी ने बहुत सँभाल कर रखा हो। कमर से मुंह तक का भाग शाल से ढ़का था। बायां हाथ मुड़कर सिर की ओर चला गया था। इसकी मुट्ठी में पांच रूपये का नोट था। हाथ पर 'नाना देशमुख' अंकित घड़ी थी, जेब में 26 रूपये तथा प्रथम श्रेणी का टिकट था।

- **अज्ञात शव :** प्राप्त सामग्री से व्यक्ति की पहचान पुलिस न कर सकी। अतः शव को अज्ञात व्यक्ति का शव घोषित कर पोस्टमार्टम के लिए भेजे जाने की व्यवस्था की गई। 6 घंटे पश्चात शव को प्लेटफार्म पर लाया गया तथा उनकी ही धोती से शव को ढँक दिया गया। थोड़ी देर में वहां भीड़ जमा हो गई तथा स्थानीय रेलवे कर्मचारी श्री वनमाली भट्टाचार्य ने उस शव को पंडित दीनदयाल उपाध्याय का शव बताकर पहचान की।

  श्री वनमाली ने अविलम्ब कायकार्ताओं को सूचना दी और पलक झपकते सैकड़ों कार्यकर्ता वहां इकट्ठे हो गये। तब तक पुलिस ने भी लखनऊ से टिकट नम्बर बताकर फोन पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय की पुष्टि कर ली।

- **पोस्टमार्टम :** शव का पोस्टमार्टम वाराणसी में हुआ। वहां से हवाई जहाज द्वारा शव को दिल्ली में 30 राजेन्द्र प्रसाद रोड लाया गया। शव के साथ श्री अटल बिहारी बाजपेयी, श्री बलराज मधोक एवं अन्य कई बड़े नेता आये। अंतिम दर्शन करने तथा श्रद्धांजलि देने के लिए देश के सभी प्रमुख दलों के नेता आये।

  श्री गुरूजी ने कहा – मन में बड़ा विषाद छा गया है। क्या हुआ होगा और किस प्रकार यह मर्मभेदी घटना घटी होगी, इसका तो पता लगाने वाले लगायेंगे। कुछ भी पता लगे, अपने संघ का एकनिष्ठ कार्यकर्ता उठ गया। जीवन के यौवन में आगे अनेक प्रकार से कार्य करने की क्षमता उनकी बढ़ती ही जा रही थी, परन्तु अब उस समृद्ध क्षमता का लाभ प्राप्त होने की संभावना नहीं रही।

- **शव यात्रा :** दोपहर 1:00 बजे "राम नाम सत्य है" के साथ शव यात्रा शुरू हुई मार्ग में अनेक स्थानों पर आम जनता तथा अनेक नेताओं ने श्रद्धांजलि दी। शव यात्रा अपराह्न 4.30 बजे निगम बोध घाट पर पहुंची जहां अंतिम संस्कार के लिए एक विशेष चबूतरे का निर्माण किया गया था। सायं 6.12 बजे शव रथ से उतार कर चबूतरे पर रखा गया। सभी वरिष्ठ नेताओं ने अंतिम श्रद्धांजलि दी तथा मंत्रों के उच्चारण के साथ चिता की अग्नि प्रज्वलित की गई। पंडित दीनदयाल उपाध्याय अमर रहें, अमर रहें के नारे गूंजते रहे।

एकात्म मानववाद

- **पण्डित दीनदयाल उपाध्याय भारत के सबसे तेजस्वी, तपस्वी एवं यशस्वी चिन्तक रहे हैं। उनके चिन्तन के मूल में लोकमंगल और राष्ट्र का कल्याण समाहित है। उन्होंने राष्ट्र को धर्म, अध्यात्म और संस्कृति का सनातन पुंज बताते हुये राजनीति की नयी व्याख्या की। वह गांधी, तिलक और सुभाष की परम्परा के वाहक थे। वह दलगत एवं सत्ता की राजनीति से ऊपर उठकर वास्तव में एक ऐसे राजनीतिक दर्शन को विकसित करना चाहते थे जो भारत की प्रकृति एवं परम्परा के अनुकूल हो और राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति करने में समर्थ हो। अपनी व्याख्या को उन्होंने "एकात्म मानववाद" का नाम दिया।**
- एकात्मक मानववाद का तात्विक सार, संक्षेप में उपाध्याय जी के ही शब्दों में इस प्रकार दोहराया जा सकता है :–

  "हमारी सम्पूर्ण व्यवस्था का केन्द्र 'मानव' होना चाहिए। जो यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे के न्याय के अनुसार समष्टि का जीवमान प्रतिनिधि एवं उसका उपकरण है। भौतिक उपकरण मानव के सुख के साधन हैं, साध्य नहीं। जिस व्यवस्था में, भिन्न रूचि लोक का विचार केवल एक औसत मानव अथवा शरीर, मन, बुद्धि व आत्मायुक्त उनेक ऐषणाओं से प्रेरित पुरुषार्थ चातुष्ट्यशील, पूर्ण मानव के स्थान पर एकांगी मानव का ही विचार किया जाये, वह अधूरी है। हमारा आधार एकात्म मानव है, जो एकात्म समष्टियों का एक साथ प्रतिनिधित्व करने की क्षमता रखता है। एकात्म मानववाद के आधार पर हमें जीवन की सभी व्यवस्थाओं का विकास करना होगा।"

दीनदयाल जी मानते थे कि पश्चिम की यह बहस भी एक मानवीय बहस है, इसे हमें जानना चाहिए तथा इससे कुछ सीखना भी चाहिए, लेकिन हमें इन द्वंदमूलक निष्कर्षों का अनुयायी नहीं बनना चाहिये।

पाश्चात्य राजनैतिक चिन्तन ने मानव को 'सेक्युलरवाद, व्यक्तिवाद (पूंजीवाद), समाजवाद एवं साम्यवाद की विचारधाराएं दी थीं। स्वतंत्र भारत का नेतृत्व भी इन्हीं वादों में भारत का भविष्य खोज रहा था। दीनदयाल जी ने इस खोज में हस्तक्षेप करते हुए यह सवाल खड़ा किया कि जब हमने पाश्चात्य साम्राज्यवाद को नकार दिया, तब अब हमारी क्या मजबूरी है कि हम पाश्चात्य वादों का अनुगमन करें।

अतः मौलिक भारतीय चिन्तन के आधार पर विकल्प देने की जिम्मेदारी उन्होंने स्वयं स्वीकार की और ''एकात्म मानववाद'' का प्रतिपादन किया।

यह विचार व्यक्ति बनाम समाज नहीं वरन् व्यक्ति और समाज की एकात्मता का विचार है। यह मानव बनाम प्रकृति नहीं वरन् मानव के साथ प्रकृति की एकात्मकता का विचार है। भौतिक बनाम आध्यात्मिक नहीं वरन् इनकी एकात्मकता का विचार है। भारत में इसे धर्म कहा गया है यतो अभ्युदय निःश्रेयस संसिद्धि सः धर्मः। अर्थात यह व्यष्टि, समष्टि, सृष्टि व परमेष्टि की एकात्मकता का विचार है।

एकात्मकता, समग्रता में निहित रहती है। समग्रता के अभाव में खण्ड दृष्टि से मानव आक्रांत होता है। जैसे ब्रह्माण्ड की समग्रता है, वैसे ही व्यक्ति की भी समग्रता है। व्यक्ति अर्थात केवल शरीर नहीं, उसके पास मन है, बुद्धि है और आत्मा भी है। यदि इन चारों में से एक की भी उपेक्षा हो जाये तो व्यक्ति का सुख विकलांग हो जायेगा। इन चारों के पृथक्–पृथक् सुख से व्यक्ति सुखी नहीं होता, उसे तो एकात्म एवं घनीभूत सुख चाहिये, जिसे आनंद कहते हैं।

एकात्म मानवदर्शन : यह मानव दर्शन, मानव जीवन एवं सम्पूर्ण सृष्टि के एकमात्र सम्बन्ध का दर्शन है। यह व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व तथा ब्रह्मांड को स्वयं में समाविष्ट करते हुये समन्वय का आधार प्रदान करता है। दीनदयालजी ने एकात्मवाद के आधार पर एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना की, जिसमें विभिन्न राज्यों की संस्कृतियाँ विकसित हों और एक ऐसा मानव धर्म उत्पन्न हो जिसमें सभी धर्मों का

- समावेश हो, जिसमें व्यक्ति को समान अवसर और स्वतंत्रता प्राप्त हो जो एक सुदृढ़, सम्पन्न एवं जागरूक राष्ट्र कहलाये।
- **समन्वयवादी दृष्टि :** पंडित दीनदयाल जी प्रत्येक समस्या का समाधान समन्वय में तलाशते थे। वह जीवन संबंधी भारतीय मान्यताओं तथा आधुनिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के बीच एक तालमेल बैठाना चाहते थे। वह आधुनिक युग की माँगों को धर्म के स्थान पर सनातन आदर्शों के आधार पर पूर्ण करना चाहते थे। अपनी इसी समन्वय विचार प्रणाली को उन्होंने बाद में "एकात्म मानववाद" का नाम दिया।
- सन् 1965 में लिखे गये प्रलेख का नाम सिद्धांत और नीति (Priniciple & Policy) था। इसमें ही एकात्म मानववाद या integral humanism का सिद्धांत प्रतिपादित किया, जिसका उद्देश्य भारत को उसकी संस्कृति और मर्यादा के आधार पर एक राजनीतिक एवं आर्थिक जनतंत्र बनाना है, जिसमें व्यक्ति को समान अवसर और स्वतंत्रता प्राप्त हो तथा जो भारत को सुदृढ़ एवं सुसम्पन्न बनाते हुये, उसे एक आधुनिक और जागरूक राष्ट्र बनायें।
- **भारत : हमारी माता :** पंडित दीनदयाल जी का कहना था "हमारी राष्ट्रीयता का आधार 'भारत माता' है, केवल भारत नहीं" माता शब्द से विच्छेद होते ही भारत केवल एक भूखण्ड रह जायेगा।

  निवासियों, देशवासियों का ममत्व तो माता वाले सम्बन्ध से ही जुड़ता है। उन लोगों का प्रेम ही देश भक्ति कहलाता है जो पुत्र के रूप में अपने देश से सम्बद्ध हैं। यही देश भक्ति अमरत्व प्राप्त करती है।
- **राजनीति में प्रमाणिकता :** दीनदयाल जी के राजनीतिक शुचिता एवं प्रमाणिक पावन विचार आज के राजनीतिक फलक पर ध्रुव नक्षत्र की भांति आलोकित हैं। उन्होंने कहा था "हम वोटों के लिए सौदेबाजी नहीं करेंगे, कुछ लोगों ने हिन्दू–मुस्लिम भेद अपने स्वार्थ के लिए बनाये रखा है। हम साम्प्रदायिक कदापि नहीं हैं। सच तो यह है कि हमारा गैर हिन्दू से कोई मतभेद नहीं है यदि वह राष्ट्रीय प्रगति का है।

- **सदा सकारात्मक :** पंडित जी का दृष्टिकोण सकारात्मक एवं आशावादी था। एक बार की बात है कि नानाजी देशमुख के निर्देशन पर श्री भगवती प्रसाद शुक्ल, जवाहर लाल नेहरू की विभिन्न समस्याओं और विफलताओं पर आधारित पुस्तक लिखने की तैयारी कर रहे थे। सामग्री छांटने में लगे हुये थे। इस बीच दीनदयाल जी आ गये और पूछा "भगवती जी! क्या कर रहे हो ?" भगवती जी ने कार्य और निर्देशन स्पष्ट किया तो दीनदयाल जी ने कहा "तुम जो कर रहे हो वह सकारात्मक कार्य नहीं है किन्तु नाना जी ने कहा है तो करो।" प्रसंग की जानकारी होने पर नाना जी भी सहमत हो गये और वह कार्य बंद कर दिया गया।
- **अर्थ का संतुलन आवश्यक :** अर्थ का अभाव ही नहीं अर्थ का अत्याधिक प्रभाव भी धर्म का नाश करता है। यह भारत का अपना विशेष दृष्टिकोण है। पश्चिम के लोगों ने अर्थ के प्रभाव का विचार नहीं किया। अर्थ जब अपने में या उसके द्वारा प्राप्त पदार्थों में और उनसे प्राप्त भोग–विलास में आसक्ति उत्पन्न कर देता है तब अर्थ का प्रभाव कहा जाता है। जिसे केवल पैसे की ही धुन लगी रहे देश, धर्म, जीवन का सुख सब कुछ भूल जाता है। इसी प्रकार विषयासक्त मनुष्य पौरुषविहीन होकर स्वयं और समाज के नाश का कारण बनता है। प्रथम प्रकार के प्रभाव में अर्थ साधन न रह कर साध्य बन जाता है। द्वितीय में अर्थ धर्माचरण का साधन न होकर विषय–भोगों का साधन बन जाता है। विषय–तृष्णा की कोई मर्यादा न होने के कारण एक ओर तो ऐसे व्यक्ति के सम्मुख सदैव अर्थ का अभाव ही बना रहेगा, दूसरे पौरूषहानि से उसकी अर्थोपार्जन की क्षमता भी कम होती जायेगी। जब 'अर्थ' ही समाज के प्रत्येक व्यवहार और व्यक्ति की प्रतिष्ठा का मापदण्ड बन जाय तब भी अर्थ का प्रभाव हो जाता है। जब समाज में सभी धनपरायण हो जायें तो प्रत्येक कार्य के लिए अधिकाधिक धन की आवश्यकता होगी। धन का यह प्रभाव प्रत्येक के जीवन में अर्थ का अभाव उत्पन्न कर देता है।

- **चारित्रिक शुचिता :** दीनदयाल जी का कहना था कि सेवा का अनाधिकार उपयोग भी एक प्रकार की चोरी है। वह एक बार वाराणसी से बलिया जा रहे थे तृतीय श्रेणी रेलवे में तिल रखने की जगह नहीं थी। अतः कार्यकर्ताओं ने उनका बिस्तर द्वितीय श्रेणी में लगा दिया। बलिया पहुंचने पर टिकट निरीक्षक के मना करने पर भी वह स्टेशन मास्टर के पास गये और दोनों श्रेणियों के किराये का अंतर थमा दिया।
- **विदेश यात्रायें :** दीनदयाल जी ने अपनी राजनैतिक विचारधारा के सही उद्देश्य विचारों और सिद्धांतों से अवगत कराने हेतु अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोप और अफ्रीका के कई देशों की यात्रायें की।

अंतिम भाषण के कुछ अंश

- प्रत्येक राष्ट्र अपने वैभव की कामना लेकर ही प्रगति करता है। वैभव की यह कामना अत्यंत स्वाभाविक है, जिसमें कामना नहीं, उसे मानव कहना अनुपयुक्त होगा। प्रत्येक व्यक्ति ऊंचा उठना चाहता है, आगे बढ़ना चाहता है। सुखी बनना चाहता है, किन्तु विचार का प्रश्न यह है कि यह सुख, यह वैभव, यह उत्कर्ष, इसका रूप क्या हो? हम ऊपर उठ रहे हैं, इसका मतलब क्या ?बहुत बार लोग ऐसा समझते हैं कि व्यक्तिगत रूप से मेरा सम्मान बढ़ जाये तो हम ऊंचे हो जायें, परन्तु जरा गहराई के साथ सोचें तो यह बात पता लगेगी कि जिस समाज में हम पैदा हुये हैं, जिस राष्ट्र के हम अंग है, उससे अलग होकर यह व्यक्तिगत आकांक्षा पूरी नहीं हो सकती। अगर कुछ हुआ भी तो वह अधूरा रहेगा। सर्वांगीण प्रगति अकेले नहीं की जा सकती। कारण, व्यक्तिगत जीवन नाम की चीज वास्तव में कोई चीज है ही नहीं। यह तो शायद शरीर का बंधन है जिसके कारण ऐसा अनुभव होता है कि मैं हूँ। राष्ट्र के गौरव में ही हमारा गौरव है, परन्तु आदमी जब इस सामूहिक भाव को भूलकर अलग–अलग व्यक्तिगत धरातल पर सोचता है तो उससे नुकसान होता है। जब हम सामूहिक रूप से अपना–अपना काम करके राष्ट्र की चिंता करेंगे तो सबकी व्यवस्था हो जायेगी।

यह मूलभूत बात है कि हम सामूहिक रूप से विचार करें, समाज के रूप से विचार करें, व्यक्ति के नाते से नहीं। इसके विपरीत कोई भी काम किया गया तो वह समाज के लिए घातक होगा। सदैव समाज का विचार करके काम करना चाहिए।

- हर एक व्यक्ति अपने प्रान्त, जाति के नाते खड़ा दिखाई देता है, राष्ट्र को भूल जाते हैं। राष्ट्र का विस्मरण हुआ तो राजनीतिक दल चल नहीं सकता। आखिर राजनीति तो राष्ट्र के लिए ही है। राष्ट्र को भूल गये तो व्यापार नहीं चल सकता, राष्ट्र को भूल गये तो विद्या–बुद्धि किसी की कीमत नहीं रहेगी। राष्ट्र के स्मरण से सबका मूल्य बढ़ जाता है। राष्ट्र के नाते खड़े होने से व्यक्ति की कीमत बढ़ जाती है। राष्ट्रहित का महत्व इसी कारण होता है।
- परम वैभव की प्राप्ति समाज और राष्ट्र का मोक्ष है। राष्ट्र को परम वैभव प्राप्त कराने हेतु पंडित जी दो शर्तें आवश्यक मानते थे। पहली यह कि वैभव हमारे अपने राष्ट्रीय पुरूषार्थ से प्राप्त होना चाहिए। इसके लिए सम्पूर्ण राष्ट्र की संगठित कार्यशक्ति होना जरूरी है। यह शर्त पूरी होगी तभी हम उस वैभव को राष्ट्र का सच्चा वैभव कह सकेंगे। दूसरी शर्त है कि संगठित कार्यशक्ति के द्वारा वैभव प्राप्त करने की। यह सफलता धर्म का संरक्षण करते हुये होनी चाहिए।

दीनदयाल जी आगे कहते हैं कि हमें राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सैद्धान्तिक सभी मोर्चों पर यंत्रवाद का सामना करना पड़ेगा। हमें धर्मराज्य, लोकतंत्र, सामाजिक समानता और आर्थिक विकेन्द्रीकरण को अपना लक्ष्य बनाना होगा। इन सबका सम्मिलित निष्कर्ष ही हमें एक ऐसा जीवन दर्शन उपलब्ध करा सकेगा, जो समस्त झंझावातों में हमें सुरक्षा प्रदान कर सके। आप इसे किसी भी नाम से पुकारिये, मानववाद अथवा अन्य कोई भी नया वाद, किन्तु यही एकमेव मार्ग भारत की आत्मा के अनुरूप होगा और जनता में नवीन उत्साह संचारित कर सकेगा। श्री दत्तोपन्त ठेंगड़ी ने कहा है कि "पंडित जी भारतीयता के केवल इसलिए समर्थक नहीं थे कि वह उनकी राष्ट्रीय बपौती थी। वे जानते थे कि मानवता के दोष, विशेषकर जगत के दोष, इसी भारतीय संस्कृति के आधार पर दूर किये जा सकते है।"

उन्हें यह पूर्ण विश्वास था कि यदि समाजवाद कभी भी अपना घोषित लक्ष्य प्राप्त कर सका तो ऐसा इसी भारतीय–संस्कृति के आधार पर हो सकेगा। वे अपने समन्वयवाद के आधार पर एक ऐसे विश्व राज्य की कल्पना कर सके जिसमें विभिन्न राष्ट्रों की संस्कृतियाँ विकसित हों और एक ऐसा मानवधर्म उत्पन्न हो, जिसमें सब धर्मों का यहाँ तक कि भौतिकवाद का भी समावेश हो।

- **कृषि की समस्यायें :** कृषि को प्राथमिकता देने की घोषणा तो कई वर्षों से की जा रही है, किन्तु हमें किसान के हितों का तथा कृषि की आवश्यकताओं का ध्यान रखना होगा। पूर्व में विदेशी कम्पनियों को यहाँ उर्वरक के कारखाने खोलने की अनुमति दी गई और उन्हें मनमाने दामों पर अपना माल बेचने की छूट दी जाती रही है। सत्य तो यह है कि यदि किसान की ईंधन की आवश्यकतायें खनिज कोयले से पूरी कर दी जायें तो उसे गोबर को खाद के रूप में प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाये तो हमें उर्वरकों के नये कारखानों की आवश्यकता नहीं रहेगी। बिना खाद के केवल उर्वरकों के अधिकाधिक प्रयोग से भूमि की उर्वराशक्ति पर प्रतिकूल परिणाम होगा। उस दिन की कल्पना करके दिल एकदम हिल जाता है जब पूर्व के सरकार की अदूरदर्शी नीतियों के परिणामस्वरूप तंजौर और लुधियाना जैसे हरे–भरे जिले ऊसर हो जायेंगे। हमें इस दुष्परिणाम से बचना ही चाहिए।
- **चीन–पाकिस्तान गठबन्धन :** कम्युनिस्ट चीन और पाकिस्तान दोनों के प्रति हमारी नीति वही होनी चाहिए, जो आक्रमणकारी शत्रु देश के प्रति किसी भी स्वाभिमानी राष्ट्र की होती है। तिब्बत की स्वतंत्रता के लिए हमारा सक्रिय योगदान होना चाहिए। पाकिस्तान के प्रति हमारी नीति उसके व्यवहार के आधार पर निश्चित न होकर यदि रूस या अमेरिका के इशारे पर तय होगी तो भरतखंड में कभी शांति नहीं रह सकेगी। चीन और पाकिस्तान दोनों मिलकर अगले आक्रमण की तैयारी कर रहे हैं। हम उनकी दुरभिसन्धि और योजनाओं से बेखबर नहीं रह सकते। पिछले दिनों में देश की सैनिक तैयारी में कुछ बढ़ोत्तरी अवश्य हुई है फिर भी वह आवश्यकता से बहुत कम है।

चीन ने परमाणु अस्त्रों की दिशा में काफी प्रगति कर ली है। भारत सरकार अभी तक अपने पुराने हठवाद पर ही कायम है। हमें ये अस्त्र बनाने होंगे। बिना उनके हमारी सुरक्षा सदैव संकटापन्न रहेगी।

- **हमारा लक्ष्य :** हमने किसी सम्प्रदाय या वर्ग की सेवा का नहीं, बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र की सेवा का व्रत लिया है। सभी देशवासी हमारे बान्धव हैं। जब तक इन सभी बन्धुओं को भारत माता के सपूत होने का सच्चा गौरव प्रदान नहीं करा देंगे, हम चुप नहीं बैठेंगे। हम भारत माता को सही अर्थों में सुजला, सुफला बनाकर रहेंगे। यह दशप्रहरणधारिणी दुर्गा बनकर असुरों का संहार करेगी, लक्ष्मी बनकर जन–मन को समृद्धि देगी और सरस्वती बनकर अज्ञानान्धकार को दूर कर ज्ञान प्रकाश फैलायेगी। हिन्द महासागर और हिमालय से परिवेष्ठित भारतखंड में जब तक एकरसता, कर्मठता, सम्पन्नता, ज्ञानवत्ता, सुख और शांति की सप्तजाहन्वी का पुण्य–प्रवाह नहीं ला पाते, हमारा भगीरथ तप पूरा नहीं होगा। इस प्रयास में ब्रह्मा, विष्णु और महेश सभी हमारे सहायक होंगे। विजय का विश्वास है। तपस्या का निश्चय लेकर चलें। वंदे मातरम्।

कालीकट (दीनदयाल उपाध्याय)

मानवीय पक्ष
पण्डित जी के बारे में महत्वपूर्ण लोगों के संस्मरण।

- **अबला की रक्षा :** मध्य प्रदेश जाने के लिए मैं और पंडित दीनदयाल जी दिल्ली के रेलवे स्टेशन पर खड़ी गाड़ी के थर्ड–क्लास के डिब्बे में बैठ चुके थे। गाड़ी जाने में अभी आधा घंटा शेष था जिसके कारण डिब्बे में बहुत कम यात्री बैठे थे। इसी समय दो औरतें डिब्बे में आईं और भीख मांगने लगीं। पुलिस के एक सिपाही ने उन्हें देखा और उन्हें गाली देता हुआ मारने लगा। पंडित जी कुछ समय तक इस दृश्य को देखते रहे लेकिन अचानक उठकर उन्होंने पुलिस के सिपाही को पीटने से रोकने का प्रयत्न किया। पुलिस के सिपाही ने अभद्रता से कहा, "ये औरतें चोर हैं और ये तुम्हें परेशानी में डाल सकती हैं।

जाओ और अपनी सीट पर बैठो। यह मेरा काम है और उसे करने में दखल मत दो।" पंडित जी ये वाक्य सुनते ही क्रोधित हो उठे। मैंने जीवन में पहली और अंतिम बार उन्हें इस क्रोधावेश में देखा था। उन्होंने पुलिस के सिपाही का हाथ पकड़ते हुये कहा, "मैं देखता हूँ कि तुम उन्हें कैसे मारते हो?अदालत उन्हें उनके असामाजिक कार्यों के लिए दण्ड दे सकती है, लेकिन एक स्त्री के साथ अभद्र व्यवहार को देखना मेरे लिए असहनीय है।" पुलिस के सिपाही ने अपनी त्रुटि को माना और क्षमा की प्रार्थना की।

स्व. यज्ञदत्त शर्मा, पंजाब।

- **पॉलिश वाले पर भी दया :** उपाध्याय जी मुजफ्फरपुर से मोतीहारी जा रहे थे। उसी डिब्बे में जिले के कोई उच्च पदाधिकारी भी सफर कर रहे थे। दीनदयाल जी के जूते गंदे थे, धूल–धूसरित। ऐसी बातों की तरफ उनका ध्यान कभी नहीं जाता था। डिब्बे में एक लड़का आया और उपाध्याय जी के जूते उठाकर पॉलिश करने लगा। उपाध्याय जी अखबार पढ़ रहे थे, पढ़ते रहे। जब पॉलिश कर चुका तो वह लड़का उक्त अफसर से भी पूछने लगा, "साहब पॉलिश ?" साहब ने पूछा, "कपड़ा है साफ करने का ?" "नहीं।" लड़के ने दीनता से कहा। साहब ने कहा, "तब जाओ।" लड़का उपाध्याय जी से पैसे लेकर वापस जाने लगा। चेहरे पर बेबसी की छाया थी। उपाध्याय जी उठे। उसे रोक कर कहा, "बच्चे, साहब के जूतों पर भी पॉलिश करो।" फिर अपने झोले से एक पुराना और जर्जर तौलिया निकाला। उसका एक टुकड़ा फाड़ा और लड़के को देते हुये कहा, "लो बच्चे, यह कपड़ा लो। ठीक से रखना। फेंकना नहीं। देखा, बिना इसके तुम्हारा अभी नुकसान हो गया था।" लड़का खुश होकर उन अफसर महोदय के जूतों पर पॉलिश करने लगा। अब उपाध्याय जी का वास्तविक परिचय पाकर वे महाशय चकित हो रहे थे।

- **कार्यकर्ताओं की चिन्ता :** अक्टूबर का महीना था। माननीय दीनदयाल जी काशीपुर के दौरे पर आये थे। सायंकाल का समय था। मैं कार्यक्रम की व्यवस्था के निमित्त बहुत व्यस्त था। एक बहुत पतली कमीज पहने भाग–दौड़ कर रहा था। मुझे देखकर बोले, "इतनी पतली कमीज पहने हो, स्वेटर क्यों नहीं पहना ?" मैनें कहा, "अभी तो ठंड नहीं लग रही। जब लगेगी तो पहन लूंगा।" माननीय दीनदयाल जी अत्यन्त गंभीर होकर बोले, "देखो भाई! यह शरीर अब तुम्हारा नहीं है। यह अब राष्ट्र का है। बीमार पड़ोगे, तुम्हें कष्ट होगा और राष्ट्र की हानि होगी।" मैंने तुरन्त गलती स्वीकार कर ली और स्वेटर पहन लिया। कितनी छोटी–छोटी बातों की चिन्ता करते थे वे, अपने कार्यकर्ताओं के बारे में।

डॉ. शिव कुमार अस्थाना

- **ड्राइवर की सहायता :** एक बार दीनदयाल जी कार से वाराणसी जा रहे थे। रायबरेली कचहरी के पास गाड़ी का टायर पंचर हो गया। गाड़ी में बैठे अन्य साथी तब तक कचहरी में परिचित मित्रों से भेंट करने का लोभ संवरण न कर सकें। ड्राइवर ने पीछे से रिंच, स्टेपनी आदि निकालकर चक्का खोला और उसे कसने लगा। इसी बीच पंडित जी पंचर हुये पहिये को ले जाकर पीछे रखकर शेष सारा सामान भी रख आये। पहिये को कसकर ड्राइवर ने देखा कि चक्का नहीं है। पंडित जी हंस दिये और बोले, "जल्दी करने में थोड़ा सहयोग कर दिया है।" घटना को ड्राइवर बताते समय रो पड़ा। जहां अन्य लोग छोटी–छोटी बातों पर जल्दी करने के लिए डांट पिलाते हैं, वहां वे जल्दी में सहयोगी बनकर अपना कर्तव्य पूरा कर हे थे।

सूर्यनाथ तिवारी, सुल्तानपुर

- **नेता ही नहीं कार्यकर्ता भी :** एक बार पंडित दीनदयाल जी जब आगरा नगर में आये। एक बैठक समाप्त हो गई थी। सभी लोग जा रहे थे। केवल पंडित जी बैठे थे। वे मुझसे बोले – नीचे तो बड़ी गर्मी है, ऊपर छत पर चला जाये। ऊपर गये तो देखा कि वहां बहुत सा कूड़ा व धूल–मिट्टी पड़ी हुई थी। पर वह निराश नहीं हुये और

बोले कि मैं नीचे से बुहारी ले गया तो उन्होंने मेरे हाथ से ले ली और कहा कि अब नीचे से दरी, फर्श व चादर उठा लाओ। मैंने नीचे आकर सब सामान समेटा और ऊपर गया तो यह देखकर दंग रह गया कि उन्होंने पूरी छत को साफ करके कूड़े का ढेर एकत्रित कर रखा था। अब मुझसे बोले कि तुम इसे उठाकर नीचे डाल आओ। उसके भरवाने में भी उन्होंने सहायता की। जब तक मैं नीचे कूड़ा फेंक कर आया तो यह देखकर और भी आश्चर्य हुआ कि उन्होंने तब तक फर्श बिछा दिया था। दोनों ने मिलकर ऊपर चादर बिछाई। वे बड़े प्रसन्न चित्त से उस पर बैठे। मेरे लिए यह स्वयंसेवा की बहुत बड़ी शिक्षा थी।

सत्यनारायण गोयल, आगरा

- **बस साबुन दे दीजिये :** वे बद्रीनाथ से लौटे थे। उनकी जर्जर बनियान को देखकर उनसे पूछा गया, "आप बुरा तो नहीं मानेंगे यदि बनियान नई ले आई जाये ?" सहज मुस्कान के साथ उनका उत्तर था, "नहीं भाई, यह तो अभी दो–मास और चलेगी।" "लेकिन दिल्ली जाने के पहले अपनी धोती धोकर सुखाने के लिए तो दे दीजिये।" बोले, "नहीं–नहीं, ऐसा न करिये। मुझे कपड़े स्वयं ही धो लेने की आदत है। आप भला मेरी आदत क्यों छुड़ाना चाहेंगे? बस साबुन भर दे दीजिये।"

स्व. मा. धर्मवीर जी

- **चारित्रिक शुचिता :** आगरा में विद्याध्ययन काल में नानाजी देशमुख के साथ एक कमरे में रहते थे। एक दिन की बात है कि प्रातः दोनों लोग सब्जी लेने बाजार गये। सब्जी लेकर लौट रहे थे कि दीनदयाल जी बोले नाना बड़ा गड़बड़ हो गया। नानाजी ने गड़बड़ का कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि मेरी जेब में चार पैसे थे जिसमें एक पैसा खोटा था इस समय जो दो पैसे बचे हैं वे दोनों अच्छे हैं लगता है खोटा पैसा सब्जीवाली बुढ़िया के पास चला गया। चलो वापस चलें। वापस सब्जीवाली के पास गये और वास्तविकता बयान की तो उसने कहा कि होगा जो हुआ अब तुम्हारा पैसा कौन ढूंढे ? जाओ ठीक है।पर दीनदयाल जी नहीं माने और खोटा पैसा ढूंढ निकाला और उसे दूसरा पैसा दिया। बुढ़िया ने नम आंखों से कहा कि बेटा तुम कितने

अच्छे हो भगवान तुम्हारा भला करे और दीनदयाल जी के मुख मंडल पर था आत्म संतोष का भाव।

- **स्वदेशी से प्रेम :** उनका स्वदेशी वस्तु के व्यवहार का आग्रह बड़ा प्रबल था। एक बार नागपुर में मैं शेविंग कर रहा था। मैं अपने काम में व्यस्त था। अचानक किसी ने आकर मेरा शेविंग सोप उठाकर खिड़की से बाहर फेंक दिया। मैं समझा, किसी ने मेरे साथ मजाक किया है। जरा गुस्से से मैंने नजर उठाकर देखा तो पंडित जी को देखकर हैरान हुआ। पंडित जी तो कभी मजाक नहीं करते फिर आज साबुन क्यों फेंक दिया ?पंडित जी ने स्वयं ही कहना प्रारम्भ किया, "भाई, नाराज न होना। हम लोग स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करने के लिए अपने स्वयंसेवकों को उपदेश देते हैं, किन्तु अगर हम स्वयं उसका आचरण नहीं करेंगे तो हमारी बात का प्रभाव नहीं पड़ेगा। यह साबुन विदेशी कम्पनी का बना हुआ है। देशी साबुन जब मिल सकता है तब विदेशी कम्पनी का बना हुआ माल क्यों व्यवहार करते हो ?पंडित जी की बात सुनकर मुझे अपनी गलती का ज्ञान हो गया। इस प्रकार वे स्वदेशी वस्तु के प्रयोग के लिए विशेष रूप से आग्रहशील रहते थे।

स्व. बाबूराव पालधीकर, उड़ीसा

- **मैं यहां पुनर्जन्म लूंगा :** उड़ीसा की यात्रा में वह जगन्नाथपुरी में भगवान जगन्नाथ जी के दर्शन करने गये। वहां शीघ्र ही पंडों के धन बटोरने के हथकंडों एवं उनकी धनलिप्सा से परेशान एवं क्रोधित होकर वह भगवान जगन्नाथ जी के दर्शन किये बिना ही मंदिर से बाहर चले गये। उसी दिन संध्या को मंदिर के सामने एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया जिसमें उन्होंने इस घटना की चर्चा करते हुये कहा "मैं पवित्र मंदिर में एक सनातनी भक्त बनकर गया लेकिन एक आर्य समाजी बनकर निकला। भगवान जगन्नाथ जी के दर्शन अस्वीकार करने से मुझे बहुत दुख हुआ क्योंकि मैंने यहां से काफी दूर पर जन्म लिया है भगवान जगन्नाथ का आशीर्वाद प्रतिदिन प्राप्त करने के लिए मैं यहां अब पुनर्जन्म लूंगा।"

डॉ. भाई महावीर

- **लोक संग्रहक :** कभी–कभी ऐसे भी प्रसंग आये कि उनकी व्यस्तता का बिना विचार किये हम कुछ इस कदर मचल उठते थे, जैसे वे फालतू हों और हम अधिक कार्य व्यस्त। पंडित जी लेख लिख दीजिये और आप नहीं लिखेंगे तो कौन लिखेगा। आज की इन अमुक–अमुक घटनाओं पर पाठक 'पांचजन्य' में आपके विचार पढ़ना चाहते हैं। वे बड़े ही आनन्दित करने वाले स्वर में बोले, "मेरे और तुम्हारे विचार में क्या अन्तर है ?अन्तर नाम का पड़ सकता है, सो उसकी जगह लिख दो – दीनदयाल उपाध्याय। यदि कोई गड़बड़ होगी तो मैं देख लूंगा।" और फिर कुछ घटनायें और उनके कुछ बिन्दु बताकर कहते, "लिखकर लाओ, मैं देख लूंगा।" और जब कुछ घंटे बाद लेख उनके सामने जाता तो पढ़वाकर सुनते और उसकी खुलकर प्रशंसा करते, "इसके अमुक–अमुक पहलू पर तो मेरा ध्यान ही नहीं गया था। लेख रख जाओ, मैं एक बार फिर देख लूंगा।" और जब फिर जाता तो पुराने लेख की जगह एक नया लेख उनके ही अक्षरों में प्राप्त हो जाता।

  – भानुप्रताप शुक्ल (पत्रकार)

- **कोई हमें निकाल देगा क्या ?** सन 1957 के निर्वाचन के पूर्व लखनऊ में एक पत्रकार सम्मेलन में उन्हें जाना था। उन्होंने अपने बक्से से धुली हुई धोती निकाल कर लाने को कहा। धोती निकाली और वे पहनने लगे तो देखा कि धोती फटी है। मैंने दूसरी लाने का आग्रह किया तो वे कहने लगे कि फटी है तो क्या, साफ तो है। कोई हमें निकाल देगा क्या इसके कारण। वे वस्तु के गुणों को जीवन में स्थान देते थे। साथ ही अपने कपड़ों इत्यादि के प्रति पूर्णतया उदासीन थे। साफ सुथरा होना चाहिए, बस।

  – ओम प्रकाश गर्ग

- **सरकारी जीप का उपयोग करना ठीक नहीं :** डोंभिविली (ठाणा, जिला महाराष्ट्र) के नगरपालिका अध्यक्ष ने अपने घर पर पंडित दीनदयाल जी को जलपान के लिए निमंत्रित किया था। जलपान समाप्त हुआ। अब पंडित जी को एक अन्य कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए जाना था। जैसे ही वे निकलने लगे, नगरपालिका अध्यक्ष ने नगरपालिका की जीप मंगाई ताकि वे उसमें बैठकर जा सकें, परन्तु पंडित दीनदयाल जी ने उस जीप में बैठना विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया। वे बोले, "मैं आपके यहां निजी तौर पर आया हूँ, पालिका के कार्य से नहीं। इसलिए मेरे द्वरीर नगर पालिका की जीप का उपयोग करना ठीक नहीं।" अन्य कार्यकर्ता साथ थे ही। वे एक अन्य कार्यकर्ता के निजी वाहन में वहां से रवाना हुये।

रामभाऊ म्हालगी, महाराष्ट्र

- **बहुमुखी प्रतिभा के धनी :** पंडित दीनदयाल उपाध्याय केवल एक विचारक, श्रेष्ठ राजनेता, लेखक, कुशल वक्ता और समाजसेवी ही नहीं थे अपितु वे हर क्षेत्र में मार्गदर्शन करने वाले और नई व्यवस्था बनाने में कुशल, बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति भी थे। सन् 1947 में माह मई में, जब 'राष्ट्रधर्म' मासिक के प्रकाशन का निश्चय मा. भाऊराव देवरस ने किया तो उन्होंने दीनदयाल जी को ही उसका प्रबंध संचालक बनाया। अटल बिहारी वाजपेयी और राजीव लोचन अग्निहोत्री सम्पादक बने तथा मुझे सारी व्यवस्था देखने को कहा गया। यह निर्णय होते ही पंडित जी ने स्वयं 'राष्ट्रधर्म' नाम का पत्रक जनता में वितरित करने के निमित्त बनाया और लेटर हेड तथा रसीद आदि के प्रारूप भी तैयार किये। जब राष्ट्रधर्म के पहले अंक के छपाने का अवसर आया तो प्रस्तावित प्रेस के मालिक भार्गव जी ने मुझे बैंक की पास बुक दिखाने को कहा। पंडित जी ने यह सुनते ही कहा कि उनसे जाकर कह दो कि अग्रिम कागज भी देंगे और छपाई का मूल्य भी। भार्गव जी का मुँह बंद हो गया। यह व्यवस्था आगे बराबर चलती रही।

  उन्होंने कर्मचारियों के सेवा नियम बनाये, छुट्टियां तय की और सारे

कर्मचारियों की भविष्य निधि भी प्रारम्भ की और उसके नियम बनाये। बाद में राष्ट्रधर्म से प्रकाशित सभी पुस्तकों को कर्मचारियों को आधे मूल्य पर देने का नियम भी बना दिया। वे छपाई की गुणवत्ता पर स्वयं ध्यान रखते और प्रेस के हर विभाग के हर कार्यकर्ता को जब भी कोई समस्या आती तो उसका सही निदान बताकर समस्या का समाधान करते। ऐसे थे लगन वाले, मेहनती तथा हर एक के दुख–सुख के साथी पंडित दीनदयाल उपाध्याय।

श्री बजरंगशरण तिवारी (लखनऊ), सम्पादक, 'कलाकुंज'

बड़े काम के लिए बड़ा हौसला चाहिए : रात्रि आठ बजे स्थानीय केशरवानी आश्रम में बैठक थी। इस समय तक जनपदों का गठन यहां नहीं हुआ था। मैं जिले का मंत्री था। मंत्री की हैसियत से मैंने दीनदयाल जी के समक्ष अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस प्रतिवेदन में यह जिक्र किया गया था कि यहां ईसाई मिशनरियां बड़ी शक्ति से अपने कार्य क्षेत्र का विस्तार करती जा रही हैं और संथाल परगना के पर्वतीय क्षेत्रों में धर्मान्तरण का काम चल रहा है। प्रतिवेदन छोटा था। शीघ्र समाप्त हो गया। तत्पश्चात पंडित जी ने मुझसे पूछा, "बस इतना ही। अच्छा कुल कितनी सीट लड़ेंगे ?","ग्यारह सीटें", मैंने उत्तर दिया। बैठक से किसी ने सभी सीटें लड़ने की आवाज दी। पंडित जी ने सभी को सुन लेने के पश्चात मुझसे पूछा, "कुल कितनी सीटें हैं विधानसभा की ?" "सत्रह", मैंने कहा। पंडित जी ने बड़े ही विनोदपूर्ण ढंग से मेरी ओर इशारा करते हुये कार्यकर्ताओं को कहा, "मालूम पड़ता है मंत्री महोदय का आप लोगों पर विश्वास नहीं है।" पुनः मेरी ओर देखकर कहा, "सभी सीटों पर लड़ेंगे नहीं और ईसाईकरण को रोकना चाहेंगे। यह कैसे हो सकता है ?" इस प्रकार, सभी सीटों पर लड़ने का सर्वसम्मत फैसला हो गया। जिले की सुरक्षित सीटों में अधिकांश आदिवासी क्षेत्रों की हैं और इनमें जनसंघ को अच्छी सफलता मिली। जिले की पांच विधानसभा सीटों पर जनसंघ ने कब्जा कर लिया।

रघुनाथ पोद्दार, देवघर, बिहार

पंडित जी ने कहा, "जब मैं दिल्ली में रहता हूँ तो अजमेरी गेट से झंडेवाला जाने के लिए पहाड़गंज तांगे से जाता हूँ। पहाड़गंज में एक मोची बैठता है। तांगे से उतरते ही वह मुझे कहता है, "बाबूजी, चप्पल को पॉलिश कर दूँ ?" पिछले अनेक वर्षों से यह क्रम चल रहा है। उस मोची को पता है कि मैं चप्पल पर पॉलिश नहीं कराता हूँ, परन्तु वह यह समझता है कि मैं एक दिन अवश्य ही उससे पॉलिश करवाऊंगा। उसका प्रयास सफल रहा और एक दिन मैं उसका आग्रह टाल न सका और चप्पल पर पॉलिश करवा ही ली। कार्यकर्ता को उस मोची की तरह होना चाहिए। जो लोग हमारे साथ नहीं हैं, उनके पास जाकर अपनी विचारधारा लगातार समझानी चाहिए। उसके विचार सुनने चाहिए। एक दिन निश्चित ही वह आपके साथ आयेंगे। "केवल भाषणों में ही पंडित जी ये विचार प्रकट नहीं करते थे, बल्कि उनका सारा जीवन इसी सिद्धांत पर आधारित था।

यशवन्त मुले, महाराष्ट्र

- पंडित जी जब नागपुर आते थे, तो कार्यालय का रसोइया भी प्रसन्न हो जाता था। वह उनके लिए तरह–तरह की वस्तुयें पकाता था। वह उन्हें चाय बिलकुल ठीक समय पर देता था। प्रत्येक व्यक्ति उन्हें भोजन के लिए अपने घर ले जाना चाहता था। दीनदयाल जी भी आकर्षित करते थे। उन्हें तीस वर्षों से बड़े समीप से जानता था। मैंने उन्हें एक बार भी यह कहते हुये नहीं सुना कि मैंने यह किया, मैंने वह किया। 'मैं' शब्द वह कदाचित ही प्रयोग करते थे। ऐसे व्यक्ति को खो देना देश के लिए भारी क्षति है।

स्व. मा. मधुकर दत्तात्रेय देवरस,

- **सहृदय असाधारण व्यक्ति :** स्व. पंडित दीनदयाल जी का अनेक बार नागपुर आगमन होता था। मैं एक साधारण व्यक्ति हूँ। कार्यालय में रसोई बनाने का काम करता हूँ।

  पंडित जी के पहुंचते ही मैं उनके पास पहुंच जाया करता और उनके निकट चुपचाप खड़ा हो जाता। मेरी ओर प्रसन्नता से देखकर पंडित जी एकदम कह उठते, "कहो भाई मंगल! क्या समाचार है ?" उनके इस प्रकार पूछते ही मन गदगद हो उठता!

  मैं उनसे जब पूछता, "आपके भोजन के लिए क्या बनाऊं," तो तुरन्त कह देते, "जो रोज बनता है, वहीं मैं खाऊंगा। अलग से बनाने की आवश्यकता नहीं है।"

  मेरी हमेशा यह इच्छा रहती कि पंडित जी अपनी इच्छानुसार कुछ चीजें बनाने को कहें, परन्तु मुझे वैसा सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। रसोई घर में सबके साथ पहुंचते ही पंडित जी पूछा करते, "कहो भाई मंगल! आज क्या भोजन बनाया है।"

  कभी रात्रि का भोजन करने की उनकी सूचना पाकर मैं मन ही मन चिन्तित हो उठता और भोजन समाप्त हो जाने के कारण गरम दूध का गिलास लेकर उनके पास पहुंच जाता। मुझे देखकर वे सब समझ जाते–पूछते, "क्या लाये हो भाई! मुझे बिलकुल भूख नहीं है।" मैं उनसे दूध पीने का आग्रह करता, तब वे बड़े स्नेह से कहते, "तुम कहते हो तो पी लेता हूँ।" मेरा आग्रह पंडित जी ने स्वीकार कर लिया, इस पर मुझे कितना संतोष होता, इसका मैं वर्णन नहीं कर सकता।

  मंगलप्रसाद मिश्र (नागपुर)

पंडित दीनदयाल जी एक युगद्रष्टा थे। वे प्राचीन द्रष्टाओं तथा आने वाली पीढ़ियों दोनों का ही सामना करने में सक्षम थे। वे प्राचीन मनीषियों की बुद्धिमत्ता के सहारे आधुनिक समस्याओं का समाधान कर देते थे। अपनी दूरदर्शिता के कारण ही वे पहचान गये थे कि सुदूर भविष्य में मानव के समक्ष कौन सी समस्यायें आयेंगी और उनके लिए उन्होंने अचूक उपचार बतलाये।

उपाध्याय जी एक सच्चे कर्मयोगी थे। उनका कर्म में विश्वास था। कर्म को कुशलतापूर्वक करके उसे योग का रूप देने का गुण भी उनमें विद्यमान था। कर्म करते हुये उन्होंने फल की कभी कामना नहीं की। वह कहा करते थे कि बीज की चिंता करो, फल अपनी चिन्ता आप कर लेगा।

नेतृत्व एवं समायोजन की कला के धनी पंडित जी हम भारतीयों को उच्चादर्शों का एक अनुकरणीय सोपान दे गये। हमारा कर्तव्य है कि उन आदर्शों का अपने जीवन में समावेश करते हुये भारतमाता को विकास की ओर अग्रसर करें। ✧

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जन्मशताब्दी वर्ष में प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनायें एवं कार्यक्रम

सूचना विभाग से शासनादेश संख्या–09/2017/574/उन्नीस–2–2017–31/2017, (दिनांक : 07 जून, 2017) जारी

(i). पं0 दीनदयाल उपाध्याय जन्मशती वर्ष से सम्बन्धित कार्यक्रम 25 सितम्बर, 2017 तक आयोजित किए जाएंगे। पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी के जन्मशती वर्ष के अवसर पर कार्यक्रमों के समन्वय हेतु सचूना विभाग नोडल विभाग होगा।

(ii). मा0 मंत्रीगण के लेटर पैड में पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी के अनुमोदित ''लोगो'' का प्रयोग किया जाए तथा विभागों की ओर से लगायी जाने वाली होर्डिंग्स एवं बैनर/विज्ञापनों आदि में उक्त लोगो अनिवार्य रूप से लगाया जाए।

(iii). होर्डिंग्स एवं बैनर/विज्ञापनों आदि में पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी के महत्वपूर्ण एवं अनुमोदित सूक्ति वाक्यों का प्रयोग किया जाए।

(iv). भारतीय समाज को एकजुट करने, जन सामान्य को पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी के विचारों से अवगत कराने हेतु उनका 15 खण्डों का वांग्मय क्रय किए जाने तथा जन सामान्य में उक्त वांग्मय के प्रचार–प्रसार हेतु वितरित कराये जाने के लिए क्रय समिति गठित की जाए।

(v). विभिन्न विभागों द्वारा प्रस्तुत की गयी कार्य योजनाओं हेतु विभागों द्वारा जो व्ययभार का उल्लेख किया गया है, के सम्बन्ध में सम्बन्धित विभाग स्वयं वित्तीय नियमों के अन्तर्गत सक्षम स्तर का अनुमोदन प्राप्त करते हुए पारदर्शी कार्यवाही करेंगे और उनके द्वारा पर्याप्त मितव्ययिता बरती जाएगी।

(vi). पं0 दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी वर्ष से सम्बन्धित कार्यक्रम के आयोजन हेतु जनपद स्तर पर जिलाधिकारी पर्यवेक्षीय अधिकारी, सी0डी0ओ0 नोडल अधिकारी होंगे तथा ब्लाक स्तरीय

कार्यक्रमों हेतु सम्बन्धित उप जिलाधिकारी कार्यक्रमों का पर्यवेक्षण करेंगे।

3– पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी की जन्मशताब्दी वर्ष मनाए जाने के सम्बन्ध में विभिन्न विभागों की कार्य योजनाओं एवं कार्यक्रमों, जिनका विवरण निम्नवत् है, को इस शर्त के साथ अनुमोदित किया जाता है कि उक्त कार्य योजनाओं में व्ययभार का जो उल्लेख किया गया है, उसके संबंध में यथावश्यकतानुसार व्यवस्था कराने एवं वित्तीय नियमों के अन्तर्गत सक्षम स्तर का अनुमोदन प्राप्त कर स्वीकृत निर्गत किये जाने की कार्यवाही संबंधित विभाग द्वारा की जायेगी :–

(1). सूचना विभाग

- जनपदों में दिनांक 25 सितम्बर, 2017 से पूर्व जनपद स्तरीय अन्त्योदय मेला एवं प्रदर्शनी का तीन दिवसीय आयोजन कराया जाएगा। ऐसे प्रत्येक जनपद स्तरीय कार्यक्रम के आयोजन पर लगभग 15 लाख रुपए धनराशि का व्यय अनुमानित है।
- जनपदों के समस्त विकास खण्डों में तीन दिवसीय 'अन्त्योदय प्रदर्शनी' आयोजित की जाएगी। प्रदर्शनी के आयोजन पर लगभग 5 लाख रुपए का व्ययभार अनुमानित है।
- जनपद तथा विकास खण्ड स्तर पर सम्पन्न होने वाले इन कार्यक्रमों के सुचारू, समयबद्ध तथा सुव्यवस्थित आयोजन के लिए सम्बन्धित जिलाधिकारी की अध्यक्षता में एक समिति गठित की जाएगी, जिसमें जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ ही शिक्षण संस्थाओं, स्वैच्छिक संगठनों तथा समाजसेवियों की सहभागिता पर विशेष बल दिया जाएगा।
- जनपद तथा विकास खण्ड स्तर पर आयोजित होने वाले इन कार्यक्रमों में जनता को भारत सरकार तथा प्रदेश सरकार द्वारा संचालित विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी जाएगी। समाज के दलित, निर्धन, शोषित और उपेक्षित वर्ग इन योजनाओं का अधिकाधिक लाभ प्राप्त कर सकें, इसके लिए इन आयोजनों में विशेष प्रबन्ध किए जाएंगे।

- जनपद स्तरीय अन्त्योदय मेला एवं प्रदर्शनी तथा विकास खण्ड स्तरीय प्रदर्शनी का मूल्यांकन कर श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले जनपदों तथा विकास खण्डों को प्रोत्साहित करने की योजना है। इसके अन्तर्गत सम्पूर्ण प्रदेश के तीन सर्वश्रेष्ठ जनपदों का चयन करते हुए सम्बन्धित जिलाधिकारी एवं जिला स्तरीय अधिकारियों को पुरस्कृत किया जाएगा। इसी प्रकार प्रत्येक जनपद में सर्वश्रेष्ठ आयोजन करने वाले एक विकास खण्ड को भी पुरस्कृत किया जाएगा।

(2). पर्यटन विभाग

- उ0प्र0 सरकार के ग्रामीण पर्यटन नीति के अन्तर्गत ग्राम नगला–चन्द्रभान का विकास कराया जाना प्रस्तावित है, जिसके अन्तर्गत मूलभूत पर्यटक सुविधाओं का सृजन किया जाएगा तथा ग्रामीण पर्यटन केन्द्र के रूप में इस स्थल के व्यापक प्रचार–प्रसार का कार्य भी कराया जाएगा। इस हेतु विस्तृत प्रस्ताव आगणन तैयार कराया जा रहा है एवं भारत सरकार से वित्त पोषित कराया जाएगा।
- पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्म प्रदेश के जनपद मथुरा स्थित ग्राम नगला–चन्द्रभान में हुआ था और उनका निधन मुगलसराय में हुआ था, अतः मुगलसराय रेलवे स्टेशन का नाम पं0 दीनदयाल उपाध्याय के नाम पर रखे जाने तथा स्मृति स्थल बनाए जाने का अनुरोध भारत सरकार से किया जायेगा।

(3). उच्च शिक्षा विभाग

• महाविद्यालयों में महान चिंतक एवं राष्ट्रवादी विचारधारा के संवाहक पं0 दीन दयाल उपाध्याय के जन्म शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में वर्ष पर्यन्त परिचर्चा, सेमिनार एवं संगोष्ठी कार्यक्रम/पोस्टर प्रतियोगिता/स्लोगन लेखन प्रतियोगिता/निबन्ध लेखन प्रनतयोगिता/ वाद–विवाद प्रनतयोगिता/काव्य–पाठ प्रतियोगिता का आयोजन।

- उपरोक्त प्रतियोगिता कार्यक्रमों में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान

पर आने वाले छात्र–छात्राओं को जन्म शताब्दी समारोह के समापन की तिथि 25 सितम्बर, 2017 को वृहद कार्यक्रम आयोजित कर पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। इससे छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व का चतुर्दिक विकास होगा तथा मूल्य परक शैक्षिक क्रिया कलापों को प्रोत्साहन प्राप्त होगा।

विषय : अन्त्योदय, ग्राम्य विकास एवं एकात्म मानववाद।

- उ0प्र0 के समस्त विश्वविद्यालयों में पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी के नाम से शोधपीठ की स्थापना।

(4). माध्यमिक शिक्षा विभाग, बेसिक शिक्षा विभाग

- वाद विवाद प्रतियोगिता/निबन्ध प्रतियोगिता/चित्रकला एवं पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन।
- पं0 दीन दयाल उपाध्याय जी के जन्मदिवस पर प्रभात फेरी का आयोजन।
- सामान्य ज्ञान, सुलेख लेखन आदि से सम्बन्धित प्रतियोगिताओं का आयोजन।
- दिनांक 25 सितम्बर, 2017 तक उपरोक्त कार्यक्रमों का आयोजन व पुरस्कार का वितरण।

माध्यमिक शिक्षा विभाग (पुस्तकालय कोष्ठक)

- प्रदेश में संचालित समस्त विस्तार पटलों को "पण्डित दीन दयाल उपाध्याय राजकीय पुस्तकालय एवं जन–सूचना केन्द्र" के नाम से नामांकित किया जाय।
- प्रदेश के 75 राजकीय जिला पुस्तकालयों में विभिन्न आउटरीच प्रोग्राम्स (Outreach Programs) के माध्यम से पं0 दीन दयाल उपाध्याय जी के लक्ष्य व सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुंचाने के लिये नाटकों, साहित्यिक परिचर्चा, निबन्ध लेखन आदि जिले/ग्रामीण स्तर पर किया जाएगा तथा विभिन्न जन सुविधाओं की जानकारी आई0सी0टी0 के सहयोग से उपलब्ध करायी जायेगी।

- तहसील/ब्लाक/ग्राम स्तर के सार्वजनिक जिला शाखा पुस्तकालयों को चरणबद्ध रूप से शीघ्रातिशीघ्र ई–लाइब्रेरी के रूप में विकसित किया जाएगा जिससे कि सार्वजनिक पुस्तकालयों द्वारा ही डिजिटल इंडिया परिकल्पना को ई–लाईब्रेरी की सेवाओं द्वारा आम जन–मानस को इसका लाभ प्राप्त हो सके।

बेसिक शिक्षा विभाग

- बेसिक शिक्षा विभाग के अंतर्गत प्रदेश में भारत सरकार के सहयोग से 15 + वयवर्ग के असाक्षरों को साक्षर करने एवं उनकी साक्षरता बनाये रखने के अवसर प्रदान करने तथा कौशल विकास के प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से प्रदेश के 70 जनपदों (लखनऊ, कानपुर नगर, औरैया, गाजियाबाद एवं हापुड़ को छोड़कर) साक्षर भारत कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है।
- योजनान्तर्गत प्रत्येक ग्राम पंचायत में लोक शिक्षा केन्द्रों का संचालन किया जा रहा है। प्रदेश में योजना से आच्छादित जनपदों की 49,921 ग्राम पंचायतों में लोक शिक्षा केन्द्रों की स्थापना की गई है।

(5). नगर विकास विभाग

- उत्तर प्रदेश में 438 नगर पंचायतें हैं। यह नगरीय क्षेत्र की सबसे छोटी इकाई है। हर वर्ष एक जनपद में एक नगर पंचायत को ''पं0 दीन दयाल उपाध्याय आदर्श नगर पंचायत घोषित किया जायेगा। इसके अंतर्गत नगर पंचायत में जो मूलभूत सुविधायें हैं, वह जनसामान्य के लिये उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया जायेगा। हर वर्ष यदि किसी जनपदों में एक नगर पंचायत आदर्श नगर पंचायत घोषित की जाती है, तो 75 नगर पंचायतें एक वर्ष में आदर्श बन जायेंगी। 05 वर्ष में 375 नगर पंचायत आदर्श नगर पंचायतें बन जायेंगी अर्थात लगभग 89 प्रतिशत नगर पंचायतें 05 वर्षों में आदर्श बन जायेंगी। आदर्श नगर पंचायत को ''पं0 दीनदयाल उपाध्याय'' के नाम पर घोषित किया जाएगा।

- प्रदेश के अन्तर्गत प्रत्येक नगर निगम में से 05, प्रत्येक नगर पालिका परिषद से 03 एवं प्रत्येक नगर पंचायत से 02 दक्ष व्यक्तियों को, उनके द्वारा सेवा क्षेत्र में किये गये सराहनीय कार्य हेतु सेवा कार्य के लिए पं0 दीनदयाल पुरस्कार दिये जाने पर विचार किया जाएगा।

(6). खेलकूद विभाग

- पं0 दीनदयाल उपाध्याय जयन्ती वर्ष के अवसर पर खेल विभाग द्वारा जनपदों में जिला स्तरीय जूनियर प्रतियोगिताओं का आयोजन एवं राज्य स्तर पर सीनियर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा।
- उक्त राज्य स्तर पर सीनियर प्रतियोगिता में प्रत्येक मण्डल की एक–एक टीम प्रतिभाग करेंगी। इस प्रकार उक्त प्रतियोगिताओं में 18 मण्डलों की टीम प्रतिभाग करेगी।
- जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं में कम से कम 6 टीमें प्रतिभाग करेंगी।

(7). खादी एवं ग्रामोद्योग विभाग

- वित्तीय वर्ष 2017–18 के बजट अन्तर्गत प्राविधानित राज्य स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के नाम से होगा।
- वित्तीय वर्ष 2017–18 के बजट अन्तर्गत प्राविधानित प्रदेश के विभिन्न जनपदों में आयोजित होने वाले जागरूकता शिविर में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की जीवनी व उनके द्वारा किये गये कार्यों पर एक व्याख्यान सत्र आयोजित किया जाएगा।
- वित्तीय वर्ष 2017–18 के बजट अन्तर्गत प्राविधानित प्रचार–प्रसार मद में प्राप्त होने वाली धनराशि से जनपदों में लगने वाले होर्डिंग्स पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के स्लोगन एवं लोगो अंकित कराये जायेंगे।

- बोर्ड द्वारा ग्रामीण उद्यमियों को प्रोत्साहित करने के लिए पुरस्कार योजना सम्मिलित है। वर्ष 2017–18 के लिए रू0 5.50 लाख का आय–व्ययक प्राविधान शासन द्वारा किया गया है जिसके अन्तर्गत राज्य स्तर एवं मण्डल स्तर पर चयनित उद्यमियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्रदान किया जाता है। राज्य स्तरीय प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार को पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी के नाम से दिया जाएगा।
- योजना के अन्तर्गत प्रत्येक जनपद मुख्यालय के किसी एक विकास खण्ड में तीन दिवसीय प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाएगा। इस प्रकार प्रदेश के 75 जनपदों में 75 प्रर्दशनियाँ आयोजित की जायेंगी। प्रत्येक प्रदर्शनी हेतु रू0 1.00 लाख का व्यय अनुमानित है। इस प्रकार कुल रू0 75.00 लाख का व्यय अनुमानित है। प्रदर्शनियों का आयोजन जनपद के सम्बन्धित जनपदीय अधिकारी द्वारा किया जायेगा। प्रदर्शनियों में 10 स्टॉल खादी एवं ग्रामोद्योग उत्पाद के लगवाये जायेंगे तथा स्टॉल का साइज 9 X 9 फिट होगा।

(8). संस्कृति विभाग

जनपद/मण्डल मुख्यालय पर जिला प्रशासन के सहयोग से कराए जाने हेतु प्रस्तावित मुख्य कार्यक्रम (सितम्बर, 2017 तक)–

- पं0 दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति में स्वराज्य नाट्य प्रस्तुति, National Seminar on "Our Approach towards Integral Humanism", सांस्कृतिक उत्सव ''अपनी संस्कृतिः अपना गौरव'', पं0 दीनदयाल उपाध्याय 'लोक कला उत्सव', जश्न–ए–आजादी (सांस्कृतिक संध्या), 'विरासत' संगीत नृत्य उत्सव, 'धरोहर' सांगीतिक उत्सव, 'हमारी आजादी' नाट्य प्रस्तुति, 'अवधी लोकरंग' सांस्कृतिक उत्सव, देशभक्ति पर आधारित 'कठपुतली उत्सव', 'अवतरि' संगीत–नृत्य उत्सव, 'जज्बा' (देशभक्ति पर आधारित नाट्य उत्सव), 'बाल रंग' (चित्रकला शिविर) जिला/तहसील/ब्लाक मुख्यालय पर कराये

जाने वाले अन्य कार्यक्रम–

- पं0 दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति में पारम्परिक लोक गायन के कार्यक्रम (सोहर, बन्नी–बन्ना, नकटा, विवाह, कोहबर, विदाई आदि से सम्बंधित गीतों की प्रस्तुतियां) (30,000.00 प्रति कार्यक्रम x 10 जनपद)
- पं0 दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति में बिरहा चैता/ घाटो/विदेशिया/लोरिकी लोक गायन (30,000.00 प्रति कार्यक्रम x 08 जनपद)
- पं0 दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति में आल्हा/कजरी/संस्कार गीत एवं अन्य विधाओं के लोक गायन (30,000.00 प्रति कार्यक्रमx 08 जनपद)
- पं0 दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति में देशभक्ति पर आधारित नुक्कड़ नाटक/जादू/कठपुतली एवं क्षेत्रीय लोक विधाओं के लोक गायन (10,000.00 प्रति कार्यक्रम X 08 जनपद)
- सितम्बर, 2017 में पं0 दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति में ग्रामीण अंचलों में लोक नाट्य नौटंकी का आयोजन (50,000.00 प्रति कार्यक्रम X 08 जनपद)

(9). वन एवं वन्यजीव विभाग

- उत्तर प्रदेश वन एवं वन्य जीव विभाग द्वारा पं0 दीन दयाल उपाध्याय की जन्मशती वर्ष के अवसर पर 24 सितम्बर, 2017 तक की अवधि में प्रदेश के समस्त जनपदों में एक विशेष वृक्षारोपण (फलदार, शोभाकार एवं अन्य बहुपयोगी पौधारोपण) कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा, जिसमें विद्यार्थियों की विशेष सहाभागिता सुनिश्चित कराई जायेगी तथा वृक्षारोपण हेतु स्थानीय जन–प्रतिनिधियों, जिला स्तरीय अधिकारियों, अन्य गणमान्य व्यक्तियों, स्वयं सेवी संस्थाओं, पुलिस एवं सेना के जवानों आदि को आमंत्रित किया जाएगा।

- इसके साथ ही जन सामान्य को पं0 दीन दयाल उपाध्याय जी के परिवारों तथा प्रदेश सरकार द्वारा किये जा रहे कार्यों से परिचित कराने हेतु एक गोष्ठी का आयोजन किया जाएगा।

(10). परिवहन विभाग

- पीं0 दीन दयाल उपाध्याय की जन्मशती वर्ष के आयोजन हेतु दिनांक 25.09.2017 तक की अवधि में यातायात नियमों के प्रचार–प्रसार हेतु परिवहन विभाग द्वारा सड़क–सुरक्षा में प्रवर्तन कार्य के अतिरिक्त यातायात नियमों के पालन के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए अनेक प्रकार के कार्यक्रम जैसे विज्ञापन देना, स्कूली बच्चों में नियमों के प्रचार–प्रसार हेतु निबन्ध प्रतियोगिता/सेमिनार कराना, बस/ट्रक/टेम्पो–आटो एसोसिएशन के प्रतिनिधियों एवं चालकों के साथ समय–समय पर गोष्ठियां आयोजित की जायेंगी और ऐसे कार्यक्रमों में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के संक्षिप्त जीवन परिचय एवं साहित्य पर व्याख्यान आयोजित किये जायेंगे।
- लखनऊ में निर्माणाधीन इंस्पेक्शन एवं सर्टिफिकेशन सेंटर का नामकरण ''पंडित दीनदयाल उपाध्याय इंस्पेक्शन एवं सर्टिफिकेशन सेंटर'' किया जाएगा।
- गाजियाबाद में विभाग के निर्माणाधीन वन का नामकरण पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी के नाम पर रखा जाएगा।
- उत्तर प्रदेश राज्य परिवहन निगम द्वारा ऐसे ड्राइवरों को, जिनके द्वारा सेवाकाल में कभी कोई दुर्घटना आदि कारित न की गई हो तथा उनका कार्य एवं आचरण उत्कृष्ट श्रेणी का रहा हो, उन्हें पं0 दीनदयालय उपाध्याय जी के नाम पर रू. 1.00 लाख का पुरस्कार दिये जाने विषयक कार्यवाही की जायेगी।

(11). कृषि विभाग

- समाचार पत्र द्वारा विज्ञापन में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी के प्रतीक चिन्ह का अंकन किया जाएगा।

- विकास खण्ड स्तर पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय कृषि प्रदर्शनी एवं मेले का आयोजन किया जाएगा।
- प्रदेश के पारम्परिक मेलों/महोत्सवों के साथ विराट किसान मेले का आयोजन।
- होर्डिंग्स के माध्यम से प्रचार–प्रसार किया जाना।

(12). व्यावसायिक शिक्षा एवं कौशल विकास विभाग

- प्रदेश की समस्त 15 जिला कार्यक्रम प्रबन्धन इकाईयों में जिला समन्वयक की अध्यक्षता में जनपद के विभिन्न प्रशिक्षण केन्द्रों के केन्द्र प्रबन्धकों तथा प्रशिक्षण प्रदाता प्रतिनिधियों की एक गोष्ठी आयोजित की जायेगी। माह के प्रत्येक सोमवार को 15 जनपदों में गोष्ठी आयोजित की जायेगी।
- माह जून में ये केन्द्र प्रबन्धक किसी एक दिन अपने–अपने केन्द्रों पर पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी के जीवन दर्शन पर एक घण्टे का व्याख्यान सत्र आयोजित करेंगे। इनमें से कुछ केन्द्रों पर जिला कार्यक्रम पर जिला कार्यक्रम के प्रबन्धन इकाईयों के अधिकारियों द्वारा प्रतिभागिता की जायेगी।
- सितम्बर माह तक प्रतिमाह 15 जनपदों में एक जनपद स्तरीय मोबलाइजेशन कैम्प व रोजगार मेला आयोजित किया जायेगा, जो पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी के नाम पर होंगे।
- माह सितम्बर, 2017 में प्रत्येक जनपद में पं0 दीनदयाल उपाध्याय जीवन दर्शन पर एक भाषण प्रतियोगिता एवं अलग–अलग सेक्टरों के प्रशिक्षार्थियों हेतु स्किल कम्पटीशन आयोजित किये जायेंगे, जिनमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को पुरस्कृत किया जायेगा।

(13). ऊर्जा विभाग

- केन्द्र सरकार द्वारा प्रारम्भ की गई पं0 दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना के अन्तर्गत रू0 6946.40 करोड़ के कार्य कराये जाने की स्वीकृति प्रदान की गई हैं, जिसके अन्तर्गत

रू0 9.48 करोड़ की लागत से अविद्युतीकृत ग्रामों का विद्युतीकरण, रू0 294 करोड़ की लागत से फीडर एवं उपोक्ताओं के मीटरिंग तथा रू0 2147.76 करोड़ की लागत से वितरण प्रणाली का सुदृढ़ीकरण एवं रू0 1143.15 करोड़ की लागत से किसी ग्रामीण घरों को बिजली पहुँचाना तथा रू0 59.75 करोड़ की लागत से सांसद आदर्श ग्रामों का विद्युतीकरण कराया जाना है, जिसे अगले 2 वर्षों में पूर्ण किये जाने की योजना है। कृषि कार्य हेतु प्रदेश के 39 जनपदों में 11के0वी0 पोषकों का पृथक्कीकरण कराया जा रहा है, जिससे की किसानों को निर्वाध विद्युत आपूर्ति हो सके।

- इसके अतिरिक्त इस योजना में प्रदेश की सभी जनपदों के ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 40 लाख बीपीएल परिवारों को एलईडी बल्ब के साथ निःशुल्क विद्युत संयोजन निर्गत किया जा रहा है।

(14). हथकरघा वस्त्रोद्योग विभाग

- विभागों के विज्ञापनों में पं0 दीनदयाल जन्म–शताब्दी का प्रतीक चिन्ह (Logo) लगाया जाना सुनिश्चित किया जायेगा।
- विभाग से सम्बन्धित होर्डिंग्स पर दीनदयाल जी के कथन/सन्देशों का उल्लेख किया जाना सुनिश्चित किया जायेगा।
- विभाग से सम्बन्धित कार्यक्रमों एवं गोष्ठी में पं0 दीन दयाल उपाध्याय के जीवन वृत्तांत एवं उनके द्वारा दिये गये संदेशों पर विचार रखा जायेगा।

(15). प्राविधिक शिक्षा विभाग

- मध्य क्षेत्र (लखनऊ) में कुल 36 राजकीय एवं अनुदानित पालीटेक्निक, पूर्वी क्षेत्र (वाराणसी) कुल 44 राजकीय एवं अनुदानित पालीटेक्निक, पश्चिमी क्षेत्र (मेरठ) में कुल 38 राजकीय एवं अनुदानित पालीटेक्निक, बुन्देलखण्ड क्षेत्र (झाँसी) में कुल 27 राजकीय एवं अनुदानित पालीटेक्निक एवं प्रशासनिक प्रतिष्ठान में निदेशालय प्राविधिक शिक्षा/प्राविधिक शिक्षा

परिषद / संयुक्त प्रवेश परीक्षा परिषद / शोध विकास एवं प्रशिक्षण संस्थान किसी संस्थानों में एवं निदेशालय पर छात्रों / अभिभावकों को क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों / क्षेत्रीय स्वयंसेवकों द्वारा पं0 दीन दयाल उपाध्याय जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संगोष्ठी एवं व्याख्यान कराया जायेगा।

- सम्बन्धित क्षेत्रीय संयुक्त निदेशक अपने क्षेत्र की पालीटेक्निकों में अपने भ्रमण की तिथि तथा उपरोक्त कार्यक्रमों के संचालन हेतु अपने स्तर से संस्था प्रधानाचार्यों को पूर्व से अवगत करायेंगे।

(16). नागरिक उड्डयन विभाग

- जनपद आगरा में भारतीय वायुसेना के नियंत्रण के हवाई अड्डे पर राज्य सरकार के सहयोग से भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण द्वारा एक नये सिविल टर्मिनल का नामकरण कराया जाना है। आगरा सिविल टर्मिनल का नामकरण पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी के नाम पर किये जाने के प्रस्ताव पर कार्यवाही पृथक से चल रही है।

⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘

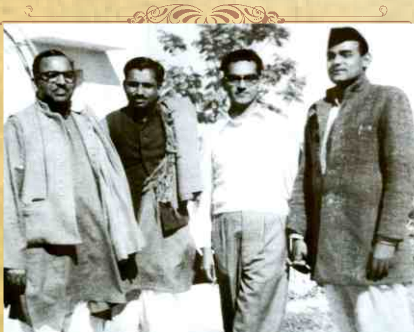

पं० दीनदयाल उपाध्याय जी के प्रेरक वचन

‘सब को काम’ ही भारतीय अर्थनीति
का एकमेव मूलाधार।

कुटीर उद्योगों को भारतीय अर्थनीति का आधार
मानकर विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था का विकास
करने से ही देश की आर्थिक प्रगति संभव है।

शिक्षा समाज में भेद निर्माण करनेवाली न होकर एकात्मभाव
निर्माण करनेवाली हो। भारत के ‘पब्लिक स्कूल’ इस उद्‌देश्य
के प्रतिकूल हैं। आवश्यकता है, सभी शिक्षण संस्थाओं
का स्तर ऊँचा उठाया जाए।

‘‘उत्पादन में पराकाष्ठा तथा उपभोग में संयम का पालन
व्यक्तिगत जीवन की सार्थकता तथा सामाजिक
जीवन का अभ्युदय है।’’

पं० दीनदयाल उपाध्याय जी के प्रेरक वचन

''राष्ट्रवाद हमारी प्रेरणा, सुशासन और विकास से अन्त्योदय हमारा लक्ष्य।''

''किसानों की आत्मनिर्भरता लोकतंत्र की आधारशिला है। उसे कायम रखाते हुए कृषि पद्धति में खोज तथा सुधार करना उपयुक्त है।''

''प्रगतिशील तकनीकी वही है- जो बेकारी मिटाए, विषमता घटाए तथा प्रदूषण से बचाए।''

''स्वावलंबन व्यक्तिगत जीवन में जितना महत्व रखाता है, सामाजिक जीवन में परस्परावलंबन उतना ही महत्वपूर्ण है।''

''अपनी संतान में स्वावलंबन एवं सामाजिक दायित्व की भावना अंकुरित करना माता-पिता का आद्य कर्तव्य है।''

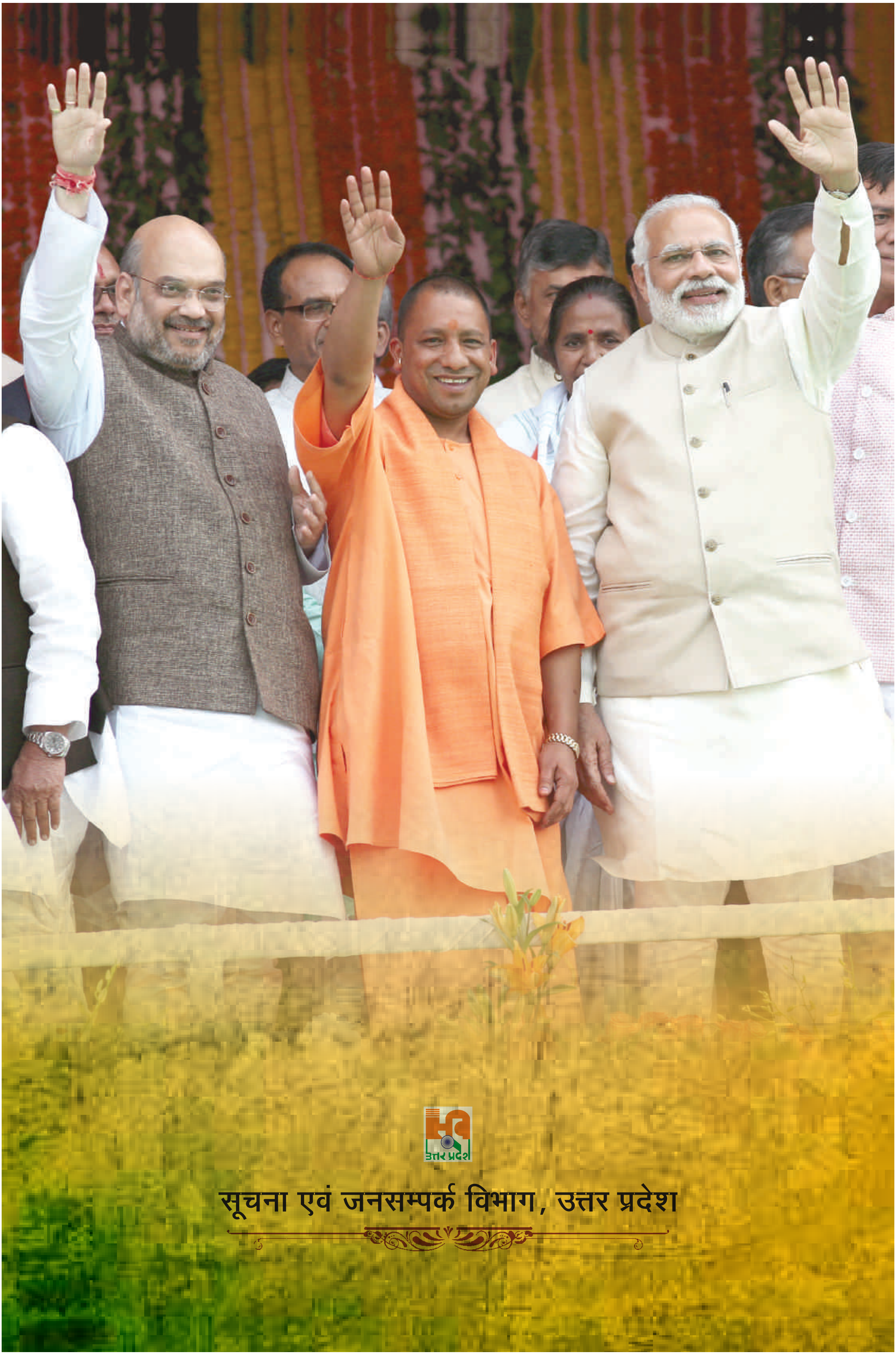

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश